AAJhohrjkxk; ue%AA

विशद

Mhrgr [dYnZ

ek.Myk

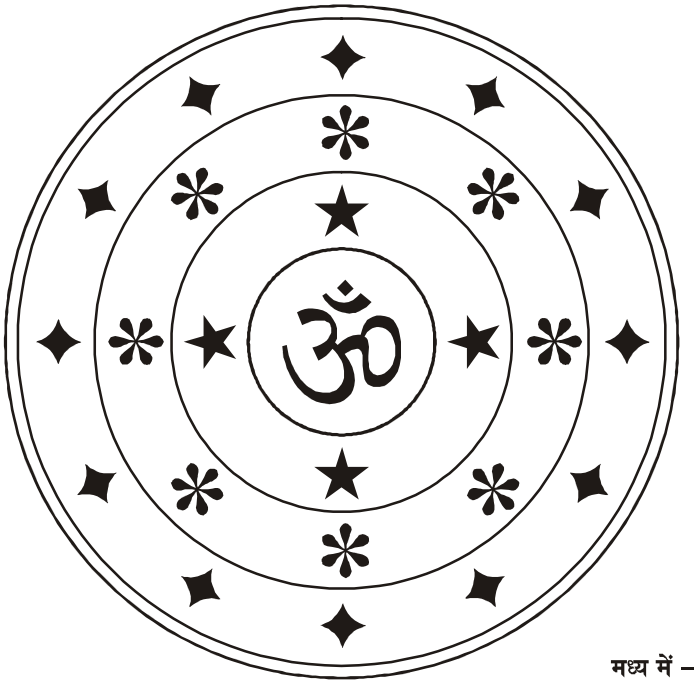

मध्य में – ॐ
प्रथम वलय में – 4 अर्घ्य
द्वितीय वलय में – 8 अर्घ्य
तृतीय वलय में – 12 अर्घ्य
कुल 24 अर्घ्य

jpf;rk%
i-iw- lkfgR; jRukdj vkpk;Z
Jh108 fo'kn lkxj th egkjkt

Ñfr	%	**fo'knpkSchlhfo/kku**
Ñfrdkj	%	i-iw- lkfgR;jRukdj]{kekewfrZ vkpk;Z Jh 108 fo'knlkxjthegkjkt
laLdj.k	%	izFke&2014* izfr;k¡ %1000
ladyu	%	eqfu Jh 108 fo'kkylkxjthegkjkt
lg;ksxh	%	{kqYyd Jh 105 folkselkxj thegkjkt
laiknu	%	cz-T;ksfrnhnh¼9829076085½cz-vkLFkknhnh]cz-liukhnh
la;kstu	%	cz-lksuwnhnh]cz-fdj.knhnh]cz-vkjrhnhnh]cz-mekhnh
lEidZ lw=k	%	9829127533] 9953877155
izkfIrLFky	%	1- tSu ljksoj lfefr] fueZydqekj xksèkk] 2142] fueZyfudqat] jsfM;ksekdsZV efugkjksadkjkLrk] t;iqj Qksu%0141&2319907¼?kj½eks-%9414812008
		2- Jhjkts'kdqekjtSuBsdsnkj ,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks-%9414016566
		3 fo'knlkfgR;dsUnz JhfnxEcjtSueafnjdqvk¡ckykk tSuiqjh jsokM+h¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879
		4 fo'knlkfgR;dsUnz]gjh'ktSu t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh fu;j ykydqÙkhpkSd] xka/khuxj] fnYyh eks- 09818115971] 09136248971
eWY;	%	40@&#- ek=k

–: अर्थ सौजन्य :–

श्री विनय कुमार जैन धर्मपत्नी इन्दु जैन
पुत्र अनुज जैन श्रीमती आंचल जैन, आकाश जैन
पौत्री पर्ल जैन

एच–37, अशोक विहार फेस–1, दिल्ली. मो.: 9312259020

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com

चौबीस तीर्थंकर व्रत विधि

"तरन्ति संसार महार्णवं येन तत् तीर्थम्"

अर्थात् जिसके द्वारा संसार सागर से पार होते हैं वह तीर्थ है। इसी तीर्थ के प्रवर्तक तीर्थंकर कहलाते हैं। तीर्थ शब्द का एक अर्थ घाट भी होता है। तीर्थंकर सभी जनों को संसार समुद्र से पार उतारने के लिए धर्म रूपी घाट का निर्माण करते हैं। जैन धर्म के अनुसार प्रत्येक कालचक्र में अवसर्पिणी के दुषमा–सुषमा नामक चौथे काल के प्रारम्भ में और उत्सर्पिणी के दुषमा सुषमा तीसरे काल के आरम्भ में जब यह सृष्टि भोगयुग से कर्मयुग में प्रविष्ट होती है, तब क्रमशः चौबीस तीर्थंकर उत्पन्न होते हैं। यह परम्परा अनादिकालीन है। जैन आगम के अनुसार अतीत काल में अनन्त तीर्थंकर हो चुके हैं वर्तमान में ऋषभादि चौबीस तीर्थंकर हुए हैं और भविष्य में भी अनन्त तीर्थंकर होंगे। यहाँ परम पूज्य साहित्य रत्नाकर **आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज** द्वारा रचित इस पुस्तक में वर्तमान कालीन चौबीस तीर्थंकरों की पूजाओं का संकलन किया गया है।

तीर्थंकर की पूजा भक्ति आराधना व्रत उपवास पूजा विधान आदि मनोयोग से सम्पूर्ण क्रिया विधि से करने पर अकाल मृत्यु टलेगी। अनेक प्रकार के जीवन में आने वाले कष्ट दूर होंगे और सब प्रकार से सुख शांति यश सम्पत्ति संसति आदि की वृद्धि होगी। कालान्तर में स्वर्ग और मोक्ष के उत्तराधिकारी भी बनेंगे।

चौबीस तीर्थंकर व्रत विधि इस प्रकार है–व्रत के दिन 24 तीर्थंकर प्रतिमा का अभिषेक एवं पूजन करें। व्रत की उत्तम विधि उपवास, मध्यम विधि अल्पाहार एवं जघन्य विधि एकाशन है इसमें 24 व्रत करना है।

व्रत के दिन प्रत्येक तीर्थंकर की एक–एक जाप्य एवं एक समुच्चय जाप्य करना है। व्रत में तिथि का कोई बन्धन नहीं है, एक महीने में एक व्रत अवश्य करें। व्रत के उद्यापन में उत्साहपूर्वक यह चौबीस तीर्थंकर विधान करें। व्रत की समुच्चय जाप्य–

"ॐ ह्रीं अर्हं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः।"

नोट : सुन्दर माण्डने की रचना कर उस पर भारी उत्साह के साथ यह विधान सम्पन्न करें यदि आपको अकेले विधान करना है तो मण्डल की रचना किये बिना थाली में भी यह विधान आप अष्ट द्रव्य से कर सकते हैं। नित्य नियम पूजन वाले इस विधान से अलग–अलग तीर्थंकर की प्रतिदिन अलग–अलग पूजा भी कर सकते है।

–मुनि विशाल सागर

भक्ति के फूल

आचार्य कुन्दकुन्द स्वामी ने श्रावक का प्रथम आवश्यक कर्त्तव्य देवपूजन को माना है। जिनेन्द्र देव की सच्चे भाव से पूजन करने पर ही मुक्तिरूपी फूल की प्राप्ति होती है। वर्तमान में प्राणी यत्र-तत्र कुगुरू, कुदेव, कुशास्त्र की सेवा करके अपने कष्ट, दु:ख से छुटकारा पाना चाहते हैं। जैन होकर के भी जिन्हें जिनेन्द्र देव, शास्त्र, गुरु पर श्रद्धान नहीं है ऐसे प्राणी ही अपना संसार बढ़ा रहे हैं। कहा भी है–

''उड़ान भर हवाओं में, या लगा गोता समंदर में।
तुझको उतना ही मिलेगा, जितना लिखा मुकद्दर में।।

इंसान के लिए जब सभी दरवाजे बंद हो जाते हैं उस समय भी एक दरवाजा खुला रहता है वह दरवाजा है सच्चे देव, शास्त्र, गुरु का। आज के पूर्व कई ऐसे महापुरुष हुए जब उन्होंने अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए दर-दर पर दस्तक दी, तब सभी ने अपना हाथ खींच लिया। उस समय सच्चे भाव से उन्होंने प्रभु को स्मरण किया तो उन्हें अवश्य ही सहारा मिला। ''प्रभु के द्वार पर देर तो हो सकती है किन्तु अंधेर नहीं होगा।'' कहा भी है–

''प्रभु दर्शन से नूर खिलता है, गमे दिल को सरूर मिलता है।
जो करे भाव से भक्ती प्रभु की, उन्हें कुछ न कुछ जरूर मिलता है।।

बसन्त उन बीजों, वृक्षों के लिए आता है जो बीज उगना चाहता है, जो अंकुरित हो चुके हैं, उन बीजों को नव जीवन देने के लिए **''आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज''** हमारे जीवन में बसन्त की तरह आए हैं। जो सोये हैं उन्हें जगाने के लिए, जो बैठे हैं उन्हें उठाने के लिए, जो खड़े हैं उन्हें चलाने के लिए एवं जो चल रहे हैं उन्हें मुक्ति मंजिल तक पहुँचाने के लिए। **परमपूज्य प्रज्ञा श्रमण, ज्ञान वारिधी आचार्य गुरुवर श्री विशद सागर जी महाराज** ने स्वलेखनी से अनेक विधान लिखे हैं उसी क्रम में है–''विशद चौबीस तीर्थंकर माहात्म्य भी लिखा है। अंत में वीर प्रभु से यही प्रार्थना है कि हे भगवन्! हमारा हर कदम गुरुवर के दर्शन, पूजन भक्ति की ओर बढ़े। हर सुबह गुरुवर के द्वार पर हो, और हर शाम गुरुवर की भक्ति करते हुए व्यतीत हो। गुरुवर के चरणों में अंतिम यही भावना है कि–

''गुरुवर मेरी नजरों में, वह तासीर हो जाए।
नजर जिस चीज पर डालूँ, तेरी तस्वीर हो जाए।।

सागर की एक बूँद
''ब्र. आरती दीदी'' (संघस्थ)

अभिषेक समय की आरती

(तर्ज : आनन्द अपार है....)

जिनवर का दरबार है, भक्ती अपरम्पार है।
जिनबिम्बों की आज यहाँ पर, होती जय-जयकार है।टेक।।
दीप जलाकर आरति लाए, जिनवर तुमरे द्वार जी।
भाव सहित हम गुण गाते हैं, हो जाए उद्धार जी।।1।।जिनवर...
मिथ्या मोह कषायों के वश, भव सागर भटकाए हैं।
होकर के असहाय प्रभू जी, द्वार आपके आए हैं।2।।जिनवर...
शांती पाने श्री जिनवर का, हमने न्हवन कराया जी।
तारण तरण जानकर तुमको, आज शरण में आया जी।।3।।जिनवर.
हम भी आज शरण में आकर, भक्ती से गुण गाते हैं।
भव्य जीव जो गुण गाते वह, अजर अमर पद पाते हैं।4।।जिनवर.
नैय्या पार लगा दो भगवन्, तव चरणों सिरनाते हैं।
'विशद' मोक्ष पद पाने हेतू, सादर शीश झुकाते हैं।।5।।
जिनवर का....!

शांतिधारा

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेषदोषकलमषाय दिव्यतेजोमूर्तये नम: श्रीशांतिनाथाय शांतिकराय सर्वपापप्रणाशनाय सर्वविघ्नविनाशनाय सर्वरोगोपसर्गविनाशनाय सर्वपरकृतक्षुद्रोपद्रव- विनाशनाय, सर्वक्षामडामरविनाशनाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा नम: मम (.....) **सर्वज्ञानावरण कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदर्शनावरण कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववेदनीयकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहनीयकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायु:कर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनामकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगोत्रकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वान्तरायकर्म** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रोधं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि

सर्वमायां छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वलोभं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमोहं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वरागं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वगजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसिंहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वाग्निभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसर्पभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वयुद्धभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसागरनदीजलभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वजलोदरभगंदरकुष्ठकामलादिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वनिगडादिबंधनभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववायुयानदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववाष्पयानदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचतुश्चक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वत्रिचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वद्विचक्रिकादुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववाष्पधानीविस्फोटकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविषाक्तवाष्पक्षरणभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वविद्युतदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूकम्पदुर्घटनाभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभूतपिशाचव्यंतरडाकिनीशाकिन्यादिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वधनहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वव्यापारहानिभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वराजभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वचौरभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुष्टभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशत्रुभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वशोकभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वसाम्प्रदायिकविद्वेषं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्ववैरं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भिक्षं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वमनोव्याधि** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वआर्तरौद्रध्यानं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुर्भाग्यं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वायशः** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वपापं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्व अविद्यां** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वप्रत्यवायं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वकुमतिं** छिन्द्धि छिन्द्धि

भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वक्रूरग्रहभयं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वदुःखं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि **सर्वापमृत्युं** छिन्द्धि छिन्द्धि भिन्द्धि भिन्द्धि।

ॐ त्रिभुवनशिखरशेखर-शिखामणित्रिभुवनगुरुत्रिभुवनजनता अभयदानदायकसार्वभौमधर्मसाम्राज्यनायकमहति-महावीरसन्मतिवीरातिवीर वर्धमाननामालंकृत श्रीमहावीरजिनशासनप्रभावात् सर्वे जिनभक्ताः सुखिनो भवंतु।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं आद्यानामाद्ये जम्बूद्वीपे मेरोर्दक्षिणभागे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे भारतदेशे..... प्रदेशे..... नामनगरे वीरसंवत्..... .. तमे..... मासे..... पक्षे..... तिथौ..... वासरे नित्य पूजावसरे (..... विधानावसरे) विधीयमाना इयं शान्तिधारा सर्वदेशे राज्ये राष्ट्रे पुरे ग्रामे नगरे सर्वमुनिआर्यिका-श्रावकश्राविकाणां चतुर्विधसंघस्थ मम च शांतिं करोतु मंगलं तनोतु इति स्वाहा।

हे षोडश तीर्थंकर! पंचमचक्रवर्तिन्! कामदेवरूप! श्री शांतिजिनेश्वर! **सुभिक्षं** कुरू कुरू मनः **समाधिं** कुरू कुरू **धर्मशुक्लध्यानं** कुरू कुरू **सुयशः** कुरू कुरू **सौभाग्यं** कुरू कुरू **अभिमतं** कुरू कुरू **पुण्यं** कुरू कुरू **विद्यां** कुरू कुरू **आरोग्यं** कुरू कुरू **श्रेयः** कुरू कुरू **सौहार्दं** कुरू कुरू **सर्वारिष्ट ग्रहादीन्** अनुकूलय अनुकूलय **कदलीघातमरणं** घातय घातय **आयुर्द्राघय** द्राघय। **सौख्यं** साधय साधय, ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथाय जगत् शांतिकराय सर्वोपद्रव-शांति कुरू कुरू ह्रीं नमः। परमपवित्रसुगंधितजलेन जिनप्रतिमायाः मस्तकस्योपरि शांतिधारां करोमीति स्वाहा। चतुर्विधसंघस्थ मम च सर्वशांतिं कुरू कुरू तुष्टिं कुरू कुरू पुष्टिं कुरू कुरू वषट् स्वाहा।

अज्ञान महातम के कारण हम व्यर्थ कर्म कर लेते हैं।
अब अष्ट कर्म के नाश हेतू, प्रभु शांती धारा देते हैं॥
उदक चंदन तंदुल पुष्पकै चरू सुदीप सुधूप फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले जिन गृहे कल्याण नाथ महंयजे॥

ॐ ह्रीं.....

विनय पाठ

पूजा विधि के आदि में, विनय भाव के साथ।
श्री जिनेन्द्र के पद युगल, झुका रहे हम माथ॥
कर्मघातिया नाशकर, पाया केवलज्ञान।
अनन्त चतुष्टय के धनी, जग में हुए महान्॥
दुखहारी त्रयलोक में, सुखकर हैं भगवान।
सुर-नर-किन्नर देव तव, करें विशद गुणगान॥
अघहारी इस लोक में, तारण तरण जहाज।
निज गुण पाने के लिए, आए तव पद आज॥
समवशरण में शोभते, अखिल विश्व के ईश।
ॐकारमय देशना, देते जिन आधीश॥
निर्मल भावों से प्रभू, आए तुम्हारे पास।
अष्टकर्म का नाश हो, होवे ज्ञान प्रकाश॥
भवि जीवों को आप ही, करते भव से पार।
शिव नगरी के नाथ तुम, विशद मोक्ष के द्वार॥
करके तव पद अर्चना, विघ्न रोग हों नाश।
जन-जन से मैत्री बढ़े, होवे धर्म प्रकाश॥
इन्द्र चक्रवर्ती तथा, खगधर काम कुमार।
अर्हत् पदवी प्राप्त कर, बनते शिव भरतार॥
निराधार आधार तुम, अशरण शरण महान्।
भक्त मानकर हे प्रभू! करते स्वयं समान॥
अन्य देव भाते नहीं, तुम्हें छोड़ जिनदेव।
जब तक मम जीवन रहे, ध्याऊँ तुम्हें सदैव॥
परमेष्ठी की वन्दना, तीनों योग सम्हाल।
जैनागम जिनधर्म को, पूजें तीनों काल॥
जिन चैत्यालय चैत्य शुभ, ध्यायें मुक्ती धाम।
चौबीसों जिनराज को, करते 'विशद' प्रणाम॥

मंगल पाठ

परमेष्ठी त्रय लोक में, मंगलमयी महान।
हरे अमंगल विश्व का, क्षण भर में भगवान॥1॥
मंगलमय अरहंतजी, मंगलमय जिन सिद्ध।
मंगलमय मंगल परम, तीनों लोक प्रसिद्ध॥2॥
मंगलमय आचार्य हैं, मंगल गुरु उवज्झाय।
सर्व साधु मंगल परम, पूजें योग लगाय॥3॥
मंगल जैनागम रहा, मंगलमय जिन धर्म।
मंगलमय जिन चैत्य शुभ, हरें जीव के कर्म॥4॥
मंगल चैत्यालय परम, पूज्य रहे नवदेव।
श्रेष्ठ अनादिनन्त शुभ, पद यह रहे सदैव॥5॥
इनकी अर्चा वन्दना, जग में मंगलकार।
समृद्धी सौभाग्य मय, भव दधि तारण हार॥6॥
मंगलमय जिन तीर्थ हैं, सिद्ध क्षेत्र निर्वाण।
रत्नत्रय मंगल कहा, वीतराग विज्ञान॥7॥

अथ् अर्हत पूजा प्रतिज्ञायां.....।।पुष्पांजलि क्षिपामि।।

यहाँ पर नौ बार णमोकार मंत्र जपना एवं पूजन की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। (जो शरीर पर वस्त्र एवं आभूषण हैं या जो भी परिग्रह है, इसके अलावा परिग्रह का त्याग एवं मंदिर से बाहर जाने का त्याग जब तक पूजन करेंगे तब तक के लिए करें।)

इत्याशीर्वादः

पूजा पीठिका (हिन्दी भाषा)

ॐ जय जय जय नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु
णमो अरिहन्ताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोएसव्वसाहूणं॥
अरहन्तों को नमन् हमारा, सिद्धों को करते वन्दन।
आचार्यों को नमस्कार हो, उपाध्याय का है अर्चन॥
सर्वलोक के सर्व साधुओं, के चरणों शत्शत् वन्दन।
पञ्च परम परमेष्ठी के पद, मेरा बारम्बार नमन्॥

ॐ ह्रीं अनादि मूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

मंगल चार-चार हैं उत्तम, चार शरण हैं जगत् प्रसिद्ध।
इनको प्राप्त करें जो जग में, वह बन जाते प्राणी सिद्ध॥
श्री अरहंत जगत् में मंगल, सिद्ध प्रभू जग में मंगल।
सर्व साधु जग में मंगल हैं, जिनवर कथित धर्म मंगल॥
श्री अरहंत लोक में उत्तम, परम सिद्ध होते उत्तम।
सर्व साधु उत्तम हैं जग में, जिनवर कथित धर्म उत्तम॥
अरहंतों की शरण को पाएँ, सिद्ध शरण में हम जाएँ।
सर्व साधु की शरण केवली, कथित धर्म शरणा पाएँ॥

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

(चाल टप्पा)

अपवित्र या हो पवित्र कोई, सुस्थित दुस्थित होवे।
पंच नमस्कार ध्याने वाला, सर्व पाप को खोवे॥
अपवित्र या हो पवित्र नर, सर्व अवस्था पावें।
बाह्याभ्यन्तर से शुचि हैं वह, परमातम को ध्यावें॥
अपराजित यह मंत्र कहा है, सब विघ्नों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी॥
पञ्च नमस्कारक यह अनुपम, सब पापों का नाशी।
सर्व मंगलों में मंगल यह, प्रथम कहा अविनाशी॥
परं ब्रह्म परमेष्ठी वाचक, अर्हं अक्षर माया।
बीजाक्षर है सिद्ध संघ का, जिसको शीश झुकाया॥
मोक्ष लक्ष्मी के मंदिर हैं, अष्ट कर्म के नाशी।
सम्यक्त्वादि गुण के धारी, सिद्ध नमूँ अविनाशी॥
विघ्न प्रलय हों और शाकिनी, भूत पिशाच भग जावें।
विष निर्विष हो जाते क्षण में, जिन स्तुति जो गावें॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

पंचकल्याणक का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं भगवतो गर्भजन्मतपज्ञाननिर्वाणपंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंच परमेष्ठी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनसहस्रनाम अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टोत्तरसहस्रनामेभ्योअर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ्य

जल चन्दन अक्षत पुष्प चरु ले, दीप धूप फल अर्घ्य महान्।
जिन गृह में कल्याण हेतु मैं, अर्चा करता मंगलगान॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्दर्शन ज्ञान चारित्राणि तत्त्वार्थ सूत्र दशाध्याय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल विधान (हिन्दी)

(शम्भू छन्द)

तीन लोक के स्वामी विद्या, स्याद्वाद के नायक हैं।
अनन्त चतुष्टय श्री के धारी, अनेकान्त प्रगटायक है॥
मूल संघ में सम्यक् दृष्टी, पुरुषों के जो पुण्य निधान।
भाव सहित जिनवर की पूजा, विधि सहित करते गुणगान॥1॥

जिन पुंगव त्रैलोक्य गुरु के, लिए 'विशद' होवे कल्याण।
स्वाभाविक महिमा में तिष्ठे, जिनवर का हो मंगलगान॥
केवल दर्शन ज्ञान प्रकाशी, श्री जिन होवें क्षेम निधान।
उज्ज्वल सुन्दर वैभवधारी, मंगलकारी हों भगवान॥2॥

विमल उछलते बोधामृत के, धारी जिन पावें कल्याण।
जिन स्वभाव परभाव प्रकाशक, मंगलकारी हों भगवान॥
तीनों लोकों के ज्ञाता जिन, पावें अतिशय क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों में, विस्तृत ज्ञानी हैं भगवान॥3॥

परम भाव शुद्धी पाने का, अभिलाषी होकर के नाथ।
देश काल जल चन्दनादि की, शुद्धी भी रखकर के साथ॥

जिन स्तवन जिन बिम्ब का दर्शन, ध्यानादी का आलम्बन।
पाकर पूज्य अरहन्तादी की, करते हम पूजन अर्चन।।4।।

हे अर्हन्त! पुराण पुरुष हे!, हे पुरुषोत्तम यह पावन।
सर्व जलादी द्रव्यों का शुभ, पाया हमने आलम्बन।।
अति दैदीप्यमान है निर्मल, केवल ज्ञान रूपी पावन।
अग्नी में एकाग्र चित्त हो, सर्व पुण्य का करें हवन।।5।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ-प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

(दोहा छन्द)

श्री ऋषभ मंगल करें, मंगल श्री अजितेश।
श्री संभव मंगल करें, अभिनंदन तीर्थेश।।
श्री सुमति मंगल करें, मंगल श्री पद्मेश।
श्री सुपार्श्व मंगल करें, चन्द्रप्रभु तीर्थेश।।
श्री सुविधि मंगल करें, शीतलनाथ जिनेश।
श्री श्रेयांस मंगल करें, वासुपूज्य तीर्थेश।।
श्री विमल मंगल करें, मंगलानन्त जिनेश।
श्री धर्म मंगल करें, शांतिनाथ तीर्थेश।।
श्री कुन्थु मंगल करें, मंगल अरह जिनेश।
श्री मल्लि मंगल करें, मुनिसुव्रत तीर्थेश।।
श्री नमि मंगल करें, मंगल नेमि जिनेश।
श्री पार्श्व मंगल करें, महावीर तीर्थेश।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

(छन्द ताटंक)

महत् अचल अद्भुत अविनाशी, केवलज्ञानी संत महान्।
शुभ दैदीप्यमान मनः पर्यय, दिव्य अवधि ज्ञानी गुणवान।।
दिव्य अवधि शुभ ज्ञान के बल से, श्रेष्ठ महाऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।1।।

यहाँ से प्रत्येक श्लोक के अन्त में पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् करना चाहिये।

जो कोष्ठस्थ श्रेष्ठ धान्योपम, एक बीज सम्भिन्न महान्।
शुभ संश्रोतृ पदानुसारिणी, चउ विधि बुद्धी ऋद्धीवान।।

शक्ती तप से अर्जित करते, श्रेष्ठ महा ऋद्धी धारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।2।।

श्रेष्ठ दिव्य मतिज्ञान के बल से, दूर से ही हो स्पर्शन।
श्रवण और आस्वादन अनुपम, गंध ग्रहण हो अवलोकन।।
पंचेन्द्रिय के विषय ग्राही, श्रेष्ठ महा ऋद्धीधारी।
ऋषी करें कल्याण हमारा, मुनिवर जो हैं अनगारी।।3।।

प्रज्ञा श्रमण प्रत्येक बुद्ध शुभ, अभिन्न दशम पूरवधारी।
चौदह पूर्व प्रवाद ऋद्धि शुभ, अष्टांग निमित्त ऋद्धीधारी।।
शक्ति...।।4।।

जंघा अग्नि शिखा श्रेणी फल, जल तन्तू हों पुष्प महान्।
बीज और अंकुर पर चलते, गगन गमन करते गुणवान।।
शक्ति...।।5।।

अणिमा महिमा लघिमा गरिमा, ऋद्धीधारी कुशल महान्।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारण करते जो गुणवान।
शक्ति...।।6।।

जो ईशत्व वशित्व प्राकम्पी, कामरूपिणी अन्तर्धान।
अप्रतिघाती और आप्ती, ऋद्धी पाते हैं गुणवान।।
शक्ति...।।7।।

दीप्त तप्त अरु महा उग्र तप, घोर पराक्रम ऋद्धी घोर।
अघोर ब्रह्मचर्य ऋद्धीधारी, करते मन को भाव विभोर।।
शक्ति...।।8।।

आमर्ष अरू सर्वौषधि ऋद्धी, आशीर्विष दृष्टी विषवान।
क्ष्वेलौषधि जल्लौषधि ऋद्धी, विडौषधी मल्लौषधि जान।।
शक्ति...।।9।।

क्षीर और घृतस्रावी ऋद्धी, मधु अमृतस्रावी गुणवान।
अक्षीण संवास अक्षीण महानस, ऋद्धीधारी श्रेष्ठ महान्।।
शक्ति...।।10।।

(इति परम-ऋषिस्वस्ति मंगल विधानम्) परि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

मूलनायक सहित समुच्चय पूजन

(स्थापना)

तीर्थंकर कल्याणक धारी, तथा देव नव कहे महान्।
देव-शास्त्र--गुरु हैं उपकारी, करने वाले जग कल्याण॥
मुक्ती पाए जहाँ जिनेश्वर, पावन तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।
विद्यमान तीर्थंकर आदि, पूज्य हुए जो जगत प्रधान॥
मोक्ष मार्ग दिखलाने वाला, पावन वीतराग विज्ञान।
विशद हृदय के सिंहासन पर, करते भाव सहित आह्वान॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक ... सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञान! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। अत्र मम सन्निहितौ भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

जल पिया अनादी से हमने, पर प्यास बुझा न पाए हैं।
हे नाथ! आपके चरण शरण, अब नीर चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥1॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल रही कषायों की अग्नि, हम उससे सतत सताए हैं।
अब नील गिरि का चंदन ले, संताप नशाने आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥2॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

गुण शाश्वत मम अक्षय अखण्ड, वह गुण प्रगटाने आए हैं।
निज शक्ति प्रकट करने अक्षत, यह आज चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥3॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्पों से सुरभी पाने का, असफल प्रयास करते आए।
अब निज अनुभूति हेतु प्रभु, यह सुरभित पुष्प यहाँ लाए॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥4॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

निज गुण हैं व्यंजन सरस श्रेष्ठ, उनकी हम सुधि बिसराए हैं।
अब क्षुधा रोग हो शांत विशद, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥5॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञाता दृष्टा स्वभाव मेरा, हम भूल उसे पछताए हैं।
पर्याय दृष्टि में अटक रहे, न निज स्वरूप प्रगटाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी॥6॥

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

जो गुण सिद्धों ने पाए हैं, उनकी शक्ती हम पाए हैं।
अभिव्यक्त नहीं कर पाए अतः, भवसागर में भटकाए हैं॥

जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल उत्तम से भी उत्तम शुभ, शिवफल हे नाथ ना पाए हैं।
कर्मोंकृत फल शुभ अशुभ मिला, भव सिन्धु में गोते खाए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद है अनर्घ मेरा अनुपम, अब तक यह जान न पाए हैं।
भटकाते भाव विभाव जहाँ, वह भाव बनाते आए हैं॥
जिन तीर्थंकर नवदेव तथा, जिन देव शास्त्र गुरु उपकारी।
शिव सौख्य प्रदायक हैं जग में, हम पूज रहे मंगलकारी।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–**प्रासुक करके नीर यह, देने जल की धार।**
लाए हैं हम भाव से, मिटे भ्रमण संसार॥ शान्तये शांतिधारा...

दोहा–**पुष्पों से पुष्पाञ्जली, करते हैं हम आज।**
सुख-शांति सौभाग्यमय, होवे सकल समाज॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पंच कल्याणक के अर्घ्य

तीर्थंकर पद के धनी, पाएँ गर्भ कल्याण।
अर्चा करें जो भाव से, पावे निज स्थान।।1।।

ॐ ह्रीं गर्भकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

महिमा जन्म कल्याण की, होती अपरम्पार।
पूजा कर सुर नर मुनी, करें आत्म उद्धार।।2।।

ॐ ह्रीं जन्मकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कल्याणक प्राप्त कर, करें साधना घोर।
कर्म काठ को नाशकर, बढ़ें मुक्ति की ओर।।3।।

ॐ ह्रीं तपकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

प्रगटाते निज ध्यान कर, जिनवर केवलज्ञान।
स्व-पर उपकारी बनें, तीर्थंकर भगवान।।4।।

ॐ ह्रीं ज्ञानकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आठों कर्म विनाश कर, पाते पद निर्वाण।
भव्य जीव इस लोक में, करें विशद गुणगान।।5।।

ॐ ह्रीं मोक्षकल्याणकप्राप्त मूलनायक...सहित सर्व जिनेश्वरेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा- **तीर्थंकर नव देवता, तीर्थ क्षेत्र निर्वाण।**
देव शास्त्र गुरुदेव का, करते हम गुणगान॥

(शम्भू छन्द)

गुण अनन्त हैं तीर्थंकर के, महिमा का कोई पार नहीं।
तीन लोकवर्ति जीवों में, ओर ना मिलते अन्य कहीं॥
विंशति कोड़ा-कोड़ी सागर, कल्प काल का समय कहा।
उत्सर्पण अरु अवसर्पिण यह, कल्पकाल दो रूप रहा।।1।।
रहे विभाजित छह भेदों में, यहाँ कहे जो दोनों काल।
भरतैरावत द्वय क्षेत्रों में, कालचक्र यह चले त्रिकाल॥
चौथे काल में तीर्थंकर जिन, पाते है पाँचों कल्याण।
चौबिस तीर्थंकर होते हैं, जो पाते हैं पद निर्वाण।।2।।
वृषभनाथ से महावीर तक, वर्तमान के जिन चौबीस।
जिनकी गुण महिमा जग गाए, हम भी चरण झुकाते शीश॥
अन्य क्षेत्र सब रहे अवस्थित, हों विदेह में बीस जिनेश।
एक सौ साठ भी हो सकते हैं, चतुर्थकाल यहाँ होय विशेष।।3।।
अर्हन्तों के यश का गौरव, सारा जग यह गाता है।
सिद्ध शिला पर सिद्ध प्रभु को, अपने उर से ध्याता है॥

आचार्योपाध्याय सर्व साधु हैं, शुभ रत्नत्रय के धारी।
जैनधर्म जिन चैत्य जिनालय, जिनवाणी जग उपकारी।।4।।
प्रभु जहाँ कल्याणक पाते, वह भूमि होती पावन।
वस्तु स्वभाव धर्म रत्नत्रय, कहा लोक में मनभावन।।
गुणवानों के गुण चिंतन से, गुण का होता शीघ्र विकाश।
तीन लोक में पुण्य पताका, यश का होता शीघ्र प्रकाश।।5।।
वस्तु तत्त्व जानने वाला, भेद ज्ञान प्रगटाता है।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, शुभ वैराग्य जगाता है।।
यह संसार असार बताया, इसमें कुछ भी नित्य नहीं।
शाश्वत सुख को जग में खोजा, किन्तु पाया नहीं कहीं।।6।।
पुण्य पाप का खेल निराला, जो सुख-दुःख का दाता है।
और किसी की बात कहें क्या, तन न साथ निभाता है।।
गुप्ति समिति धर्मादि का, पाना अतिशय कठिन रहा।
संवर और निर्जरा करना, जग में दुर्लभ काम कहा।।7।।
सम्यक् श्रद्धा पाना दुर्लभ, दुर्लभ होता सम्यक् ज्ञान।
संयम धारण करना दुर्लभ, दुर्लभ होता करना ध्यान।।
तीर्थंकर पद पाना दुर्लभ, तीन लोक में रहा महान्।
विशद भाव से नाम आपका, करते हैं हम नित गुणगान।।8।।
शरणागत के सखा आप हो, हरने वाले उनके पाप।
जो भी ध्याये भक्ति भाव से, मिट जाए भव का संताप।।
इस जग के दुःख हरने वाले, भक्तों के तुम हो भगवान।
जब तक जीवन रहे हमारा, करते रहें आपका ध्यान।।9।।

दोहा– **नेता मुक्ती मार्ग के, तीन लोक के नाथ।**
शिवपद पाने आये हम, चरण झुकाते माथ।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक.....सहित सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सिद्धक्षेत्र, विद्यमान विंशति जिन, वीतराग विज्ञानेभ्यो अनर्घपदप्राप्त्ये जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **हृदय विराजो आन के, मूलनायक भगवान।**
मुक्ति पाने के लिए, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत् ।।

चतुर्विंशति तीर्थंकर पूजन

स्थापना

दोहा– **ऋषभादिक चौबीस जिन, जग में हुए महान।**
विशद हृदय में आज हम, करते हैं, आह्वान्।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

यह शीतल जल भर लाए, निज प्यास बुझाने आए।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्म जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन भवताप नशाए, हम ताप नशाने आए।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

हम अक्षत नाथ चढ़ाएँ, निज अक्षय निधि प्रगटाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, प्रभु शील सम्पदा पाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

संज्ञा अहार विनशाएँ, रुज क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मिथ्या का घोर अँधेरा, नश जाए अब प्रभु मेरा।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अब घाती कर्म नशाएँ, निज गुण अपने प्रगटाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल कर्म का है दुखकारी, अब फले सुगुण की क्यारी।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

निज आतम शक्ति जगाएँ, पावन यह अर्घ्य चढ़ाएँ।
हे जिन! जग मंगलकारी, हम पूजा करें तुम्हारी।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा– पद तीर्थंकर का प्रभू, पाए मंगलकार।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार।।

(चौपाई)

आदिनाथ आदी में आए, अजित नाथ सब कर्म नशाए।
सम्भवनाथ कहे जग नामी, अभिनन्दन हैं शिव पथगामी।।
सुमतिनाथ शुभ मति के धारी, पद्मप्रभू जग मंगलकारी।
जिन सुपार्श्व महिमा दिखलाए, चन्द्र प्रभु चन्दा सम गाए।।
सुविधिनाथ है जग उपकारी, शीतल जिन शीतलता धारी।
जिन श्रेयांस जी श्रेय जगाए, वासुपूज्य जग पूज्य कहाए।।
विमलनाथ कर्मों के जेता, जिनानन्त हैं कर्म विजेता।
धर्मनाथ हैं धर्म के धारी, शांतिनाथ जग शांतीकारी।।
कुन्थुनाथ के गुण जग गाये, अरहनाथ पद शीश झुकाए।
मल्लिनाथ सब कर्म हटाए, मुनिसुव्रत पावन व्रत पाए।।
नमीनाथ पद नमन हमारा, नेमिनाथ दो हमें सहारा।
पार्श्वनाथ उपसर्ग विजेता, ढोक वीर पद में जग देता।।
चौबिस जिन महिमा के धारी, कहे स्वयंभू जिन अविकारी।
जो इनके पद पूज रचाये, पुण्य निधी वह प्राणी पाए।।
जिन की महिमा यह जग गाये, अर्चाकर सौभाग्य जगाए।
भाग्य उदय मेरा अब आया, नाथ आपका दर्शन पाया।।

द्वार आपका अतिशयकारी, श्रावक सुधि आते अनगारी।
भक्ति भाव से महिमा गाते, पद में सविनय शीश झुकाते।।
गाते हैं जो भजनावलियाँ, खिलती हैं भक्ती की कलियाँ।
भाव बनाकर हम यह आये, शिव पद हमको भी मिल जाए।।

दोहा– शिव पद के धारी हुए, तीर्थंकर चौबीस।
जिनके चरणों में विशद, झुका रहे हम शीश।।
ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पूजा करते आपकी, तीन लोक के नाथ।
राह दिखाओ मोक्ष की, चरण झुकाते माथ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री आदिनाथ पूजा-1

स्थापना

दोहा– धर्म प्रवर्तक जिन हुए, जग में आप महान।
आदिनाथ भगवान का, करते हम आह्वान।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जो निर्मल नीर चढ़ाएँ, वे तीनों रोग नशाएँ।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।1।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन भवताप नशाए, जो भाव से पूज रचाएँ।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।2।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत अक्षय पद दायी, इस लोक में गाया भाई।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।3।।
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित जो पुष्प चढ़ाएँ, वे काम रोग विनशाएँ।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य क्षुधा का नाशी, नर पद पाए अविनाशी।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पूजा को दीप जलाए, वह मोह को जीव नशाए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित जो धूप जलाए, वह आठों कर्म नशाए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ताजे सरस चढ़ाए, वह मोक्ष महाफल पाए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाने लाए, पाने अनर्घ पद आए।
फिर निज के गुण प्रगटाएँ, वह मुक्ति वधू को पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्च कल्याणक के अर्घ्य

दोहा– द्वितिया कृष्ण आषाढ़ की, आदिनाथ भगवान।
सर्वार्थ सिद्धि से चय किए, पाए गर्भ कल्याण।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण नौमी प्रभु, पाए जन्म कल्याण।
शत् इन्द्रों ने न्हवन कर, किया प्रभू गुणगान।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्ण नवम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नील परी की मृत्यु लख, धरे आप वैराग।
चैत कृष्ण नौमी तिथी, छोड़ चले सब राग।।3।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चार घातिया नाशकर, पाए केवल ज्ञान।
फागुन वदि एकादशी, जग में हुई महान।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ कृष्ण की चतुर्दशी, कीन्हे कर्म विनाश।
मोक्ष कल्याणक प्राप्त कर, किए सिद्ध पद वास।।5।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

शीश झुकाते आपके, चरणों बालाबाल।
आदिनाथ भगवान की, गाते हम जयमाल।।

(पद्धरि छन्द)

जय भोग भूमि का अन्त पाय, जय ऋषभदेव अवतार आय।
जय पिता आपके नाभिराय, जय माता मरुदेवी कहाय।।1।।
जय अवधपुरी नगरी प्रधान, घर-घर में छाया सुयश गान।
सौधर्म इन्द्र तब हर्ष पाय, तव न्हवन मेरु पे जा कराय।।2।।
प्रभु के पद में करके प्रणाम, तव ऋषभनाथ शुभ दिया नाम।
शुभ धनुष पाँच सौ उच्च देह, जन-जन से जिनको रहा नेह।।3।।
लख पूर्व चौरासी उम्र जान, षट्कर्म की शिक्षा दिए मान।
नीलांजना की मृत्यू का योग, पाके छोड़े संसार भोग।।4।।
तव नग्न दिगम्बर भेष धार, निज में निज ध्याये निराकार।
प्रगटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान, प्रभु दिव्य देशना दिए जान।।5।।
फिर 'विशद' कर्म का कर विनाश, शिवपुर में जाके किए वास।
अष्टापद गाया मोक्ष थान, जो सिद्ध क्षेत्र गाया महान।।6।।

दोहा– **पुण्य पाप तज के प्रभू, किए आत्म का ध्यान।**
मोक्ष महल में जा बसे, आदिनाथ भगवान॥
ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– **करें वन्दना इन्द्र सौ, चरणों की भगवान।**
मौका हमको भी मिले, जागे भाव महान॥
॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री अजितनाथ पूजन-2

स्थापना

दोहा– **कर्म विजेता जिन हुए, अजितनाथ भगवान।**
विशद हृदय में आपका, करते हम आह्वान॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

नीर चढ़ाते भाव से, रोगत्रय हों नाश।
शिवपथ के राही बनें, पाएँ शिवपुर वास॥1॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन लाए श्रेष्ठ हम, घिसकर यह गोशीर।
चढ़ा रहे हैं भाव से, पाने भव का तीर॥2॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत लाए श्वेत यह, चढ़ा रहे पद नाथ।
अक्षय पद पाएँ प्रभो!, झुका चरण में माथ॥3॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते भाव से, काम रोग हो नाश।
मुक्ती हो संसार से, पायें शिवपुर वास॥4॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस लिए नैवेद्य यह, पूजा करने आज।
क्षुधा रोग का नाश कर, पाएँ शिव पद राज॥5॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप जलाते श्रेष्ठ हम, चहुँ दिश होय प्रकाश।
यही भावना है विशद, होय महातम नाश॥6॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाने लाए यह, अग्नी में भगवान।
अष्ट कर्म का नाशकर, पाएँ पद निर्वाण॥7॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल से पूजा हम करें, आज यहाँ पर नाथ।
मोक्ष महाफल प्राप्त हो, झुका चरण में माथ॥8॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

आठों द्रव्यों का विशद, लाए बनाके अर्घ्य।
अन्तिम है यह कामना, पाएँ सुपद अनर्घ्य॥9॥
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

वदी अमावस जेठ की, पाए गर्भ कल्याण।
अजितनाथ का देव सब, किए विशद गुणगान॥1॥
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णाऽमावस्यायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल दशमी प्रभू, अजित नाथ भगवान।
न्हवन कराकर मेरु पे, किए इन्द्र जय गान॥2॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल दशमी तिथी, पाए तप कल्याण।
इस जग का वैभव तजा, किए आत्म का ध्यान॥3॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल एकादशी, पाए केवल ज्ञान।
दिव्य देशना दे प्रभू, किए जगत कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पञ्चमी, पाए पद निर्वाण।
सिद्ध लोक में जा बसे, अजितनाथ भगवान।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अजितनाथदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– सहज रूप को धार कर, सहज लगाए ध्यान।
सहज ज्ञान पाए प्रभू, करते तव गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

अजितनाथ जिन के चरणों में, करते हम शत्-शत् वन्दन।
जित शत्रू के राज दुलारे, विजया माँ के जो नन्दन।।1।।

नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, गज है जिन का शुभ लक्षण।
लाख बहत्तर पूर्व की आयू, हाथ अठारह सौ तुंग तन।।2।।

जन्म समय दश अतिशय पाये, दश पाए पा केवलज्ञान।
चौदह अतिशय रहे देवकृत, प्रातिहार्य वसु रहे महान।।3।।

ज्ञान दर्शनावरण मोहनीय, अन्तराय का करके नाश।
अनन्त चतुष्टय पाय प्रभु जी, कीन्हे अनुपम ज्ञान प्रकाश।।4।।

दिव्य देशना देकर प्रभु जी, किए जगत जन का कल्याण।
सर्व कर्म को नाश आपने, पाया अनुपम पद निर्वाण।।5।।

कूट सिद्ध पर तीर्थराज से, किए मोक्ष को आप प्रयाण।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होय जगत जन का कल्याण।।6।।

दोहा– राही मुक्ती मार्ग के, बने आप भगवान।
हमको यह पद प्राप्त हो, दीजे यह शुभ ज्ञान।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– रत्नत्रय को प्राप्त कर, पाए शिव सोपान।
अर्चा करके आपकी, जीव करें कल्याण।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री सम्भवनाथ जी पूजन-3

स्थापना

दोहा– सम्भव जिन समभाव धर, पाए भव से पार।
आह्वानन् करते हृदय, बन जाएँ अनगार।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

क्षीर सिन्धु का जल यह लाए, तीनों रोग नशाने आए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।1।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित चन्दन यहाँ घिसाये, भव आतप मेरा नश जाए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत चढ़ा रहे शुभकारी अक्षय पद पाएँ मनहारी।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाने को हम लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस सद्य नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधा रोग से मुक्ती पाएँ।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।5।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

पावन दीप जलाकर लाए, मोहनाश मेरा हो जाए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाते यह शुभकारी, कर्मों की नश जाए क्यारी।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से पूजा यहाँ रचाएँ, मोक्ष महाफल हम पा जाएँ।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।8।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य बनाकर के यह लाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
सम्भव जिन की महिमा गाते, चरणों में नत शीश झुकाते।9।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

फागुन सित आठें पाए, सुर गर्भ कल्याण मनाए।
जिन सम्भव अन्तर्यामी, हम चरणों करें नमामी।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक सित पूनम गाई, जो जन्म की तिथि कहलाई।
मेरू पे न्हवन कराया, देवों ने हर्ष मनाया।।2।।

ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला पूर्णिमायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षण भंगुर यह जग जाना, संयम धर मुक्ती पाना।
मगशिर सित पूनम प्यारी, प्रभु बने आप अनगारी।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला पूर्णिमायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि चौथ बताए, जिन केवल ज्ञान जगाए।
अज्ञान के मेघ हटाए, रवि केवल जो प्रगटाए।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा चतुर्थ्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

षष्ठी सित चैत बखानी, प्रभु पाए शिव रजधानी।
कर्मों का किया सफाया, निज आतम सौख्य उपाया।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला षष्ठम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– नट की भाँति जीव है, नाटक यह संसार।
गुणमाला गाते यहाँ, पाने भव से पार।।

(चौपाई)

जय जय जय सम्भव जिन स्वामी, करुणानिधि हे अन्तर्यामी।
ग्रैवेयक से चयकर आये, श्रावस्ती को धन्य बनाए।।1।।
पिता जितारी जिनके गाए, मात सुसेना प्रभु जी पाए।
लाख साठ पूरव की भाई, आयु चार सौ धनुष ऊँचाई।।2।।
घोड़ा लक्षण जिनका गाया, तप्त स्वर्ण सम तन बतलाया।
जग के भोग जिन्हें ना भाए, छोड़ के सब जिन दीक्षा पाए।।3।।
चार घातिया कर्म नशाए, प्रभु जी केवल ज्ञान जगाए।
समवशरण तब देव बनाए, दिव्य देशना प्रभू सुनाए।।4।।
ऋषि द्वय लक्ष आपके गाए, गणधर एक सौ पाँच बताए।
चारुदत्त जी प्रथम कहाए, जिनवर की जो महिमा गाए।।5।।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, मुक्ती पाए अन्तर्यामी।
'विशद' भावना यही हमारी, शिवपद पाएँ हे त्रिपुरारी।।6।।

दोहा– सिद्ध शिला पर आपने, विशद बनाया धाम।
मुक्ती हो संसार से, करते चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री संभवनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भाते हैं हम भावना, प्रभू आपके द्वार।
कैसे भी हो शीघ्र हो, मेरा आत्म उद्धार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अभिनन्दन जिन पूजा-4

स्थापना

अभिनन्दन जिन राज का, करते हम आह्वान।
शिव पद हमको दो प्रभू, पाएँ जीवन दान॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सुखमा छन्द)

क्षीर सिन्धु से जल भर लाए, रोग त्रय मेरा नश जाए।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केसर संग घिसाए, भवाताप के नाश को आए।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत अक्षय यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी को हम पाएँ॥
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ा हर्षाएँ, काम रोग से मुक्ती पाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सद्य चरू से पूज रचाएँ, क्षुधा रोग को पूर्ण नशाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नमयी शुभ दीप जलाएँ, मोह महातम शीघ्र नशाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप जलाएँ, अष्ट कर्म से मुक्ती पाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ताजे श्रेष्ठ सरस फल लाएँ, पूजा कर शिव पदवी पाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण गाएँ, पद अनर्घ्य हम भी पा जाएँ।
अन्दर में हम भक्ति जगाएँ, सिद्ध शिला पर धाम बनाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

वैशाख शुक्ल छठ आई, रत्नों की झड़ी लगाई।
जब गर्भ में प्रभु जी आए, तव मात पिता हर्षाए॥1॥

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बारस सित माघ बताई, जनता सारी हर्षाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जयकारा सभी लगाए॥2॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित माघ द्वादशी जानो, संयम धारे प्रभु मानो।
वन में जा संयम धारे, तब देव किए जयकारे॥3॥

ॐ ह्रीं माघशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदश सित पौष की गाई, प्रभु ज्ञान की कली खिलाई।
सब दिव्य देशना पाए, जिन धर्म की धार बहाए॥4॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सुदी छठ जानो, शिव पद पाए प्रभु मानो।
सम्मेद शिखर शुभ गाया, आनन्द कूट मन भाया।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला षष्ठ्म्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– अभिनन्दन वन्दन करें, चरण आपके दास।
जयमाला गाते चरण, पाने मुक्ती वास।।

(आल्हाछन्द)

अभिनन्दन प्रभु के चरणों में, माथा इन्द्र झुकाते हैं।
संवर पितु सिद्धार्था माता, के जो बाल कहाते हैं।।1।।
नगर अयोध्या जन्म लिए तब, इन्द्र ऐरावत ले आया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराके, बन्दर लक्षण बतलाया।2।।
पचास लाख पूरब की आयू, देह स्वर्णमय शुभकारी।
साढ़े तीन सौ धनुष ऊँचाई, सहस्त्राष्ट लक्षण धारी।।3।।
सहस भूप सह दीक्षा पाए, दो दिन बाद लिए आहार।
नगर अयोध्या इन्द्रदत्त नृप, के गृह वरषे रत्न अपार।।4।।
गणधर एक सौ तीन आपके, वज्रनाभि के गणी प्रधान।
राक्षेश्वर था यक्ष आपका, यक्षी वज्र शृंखला जान।।5।।
कूटानन्द से तीर्थराज पर, खड्गासन से मोक्ष प्रयाण।
'विशद' मोक्ष पद पाए प्रभुजी, करने वाले जग कल्याण।।6।।

दोहा– शिवपद पाया आपने, आठों कर्म विनाश।
मुक्ती पाएँ हम प्रभू, कर दो पूरी आस।।

ॐ ह्रीं श्री अभिनन्दननाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा–बनकर आये भक्त हम, प्रभू आपके द्वार।
करना होगा भक्त को, हे प्रभु! भव से पार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री सुमतिनाथ जिनपूजा-5

स्थापना

दोहा– सुमतिनाथ के पद युगल, झुका रहे हम माथ।
आह्वानन् करते हृदय, ऊपर करके हाथ।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम् सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(मोतियादाम छन्द)

चढ़ाने लाये हम यह नीर, मिटाने जन्म जरा की पीर।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते सुरभित गंध विशेष, नाश कर भवाताप तीर्थेश।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत धवल महान, पाएँ हम अक्षय पद भगवान।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

चढ़ाने लाए सुरभित फूल, पूर्ण हो काम रोग निर्मूल।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते यह नैवेद्य जिनेश, नाश हो क्षुधा रोग अवशेष।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

करें हम दीप से यहाँ प्रकाश, शीघ्र हो मोह महातम नाश।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जलाते अग्नी में यह धूप, कर्म नश पाएँ सिद्ध स्वरूप।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।7।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते फल हम हे भगवान!, मोक्ष फल पाएँ प्रभू महान।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।8।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

बनाया अष्ट द्रव्य का अर्घ्य, चढ़ाते पाने सुपद अनर्घ्य।
प्राप्त हो हमको शिव सोपान, शीघ्र पद पाएँ हम निर्वाण।।9।।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

श्रावण शुक्ला द्वितिया पाए, सुमतिनाथ जी गर्भ में आए।
माँ को सोलह स्वप्न दिखाए, मात पिता के भाग्य जगाए।।1।।
ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल एकादशि गाई, सुमतिनाथ जिन मंगलदायी।
जन्मे तीन ज्ञान के धारी, इन्द्र किए तब उत्सव भारी।।2।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नौमी सित वैशाख बताई, संयम धारे जिस दिन भाई।
प्रभु वैराग की ज्योति जगाई, मुनिपद की तब बारी आई।।3।।
ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला नवम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत सुदी ग्यारस शुभ पाए, केवलज्ञान प्रभू प्रगटाए।
समवशरण आ देव बनाए, दिव्य देशना आप सुनाए।।4।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ग्यारस चैत शुक्ल की गाई, सुमतिनाथ ने मुक्ती पाई।
शिव पथ को तुमने अपनाया, सिद्ध शिला पर धाम बनाया।।5।।
ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला एकादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– पूजा करते भाव से, भक्ती धार विशेष।
गुणमाला गाते यहाँ, भव नश जाएँ अशेष।।

(शम्भू छन्द)

सुमतिनाथ तीर्थंकर पञ्चम, पञ्चम गति प्रगटाए हैं।
अन्तिम ग्रीवक से च्युत होकर, जन्म अयोध्या पाए है।।1।।
मात मंगला सोलह सपने, देख हुई थी भाव विभोर।
पिता मेघरथ के गृह खुशियाँ, अनुपम छाई चारों ओर।।2।।
अष्ट देवियों को माता की, सेवा का अवसर आया।
पाण्डुक शिला पे न्हवन कराने, का सौभाग्य इन्द्र पाया।।3।।
चकवा चिन्ह आपके पद में, धनुष तीन सौ ऊँचाई।
चालिस लाख पूर्व की आयु, देह स्वर्ण सम शुभ गाई।।4।।
पूर्व भवों का चिन्तन करके, प्रभु वैराग्य जगाए थे।
पञ्च महाव्रत धारण करके, मुनिवर दीक्षा पाए थे।।5।।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, केवलज्ञान जगाया है।
भवि जीवों ने दिव्य देशना, का अवसर शुभ पाया है।।6।।

दोहा– योग रोधकर आपने, किया आत्म का ध्यान।
मुक्त हुए संसार से, शिवपुर किया प्रयाण।
ॐ ह्रीं श्री सुमतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– रत्नत्रय निधि प्राप्त कर, हुए त्रिलोकी नाथ।
'विशद' शांति कर दीजिए, चरण झुकाते माथ।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पद्मप्रभु पूजन-6

स्थापना

पद्म प्रभु ने पद्म सम, धार लिया वैराग।
तिष्ठाते निज हृदय में, करके पद अनुराग॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

हम निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादी रोग नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥1॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यह घिसकर लाए, भवताप नशाने आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥2॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यह यहाँ चढ़ाएँ, हम अक्षय पदवी पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥3॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह सुरभित पुष्प चढ़ाएँ, हम काम बाण विनसाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥4॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ा हर्षाएँ, हम क्षुधा से मुक्ती पाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥5॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह दीप जलाए, मम मोह नाश हो जाए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥6॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥7॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह पूजा को लाए, शिव फल पाने हम आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥8॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

वसु द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पाने अनर्घ्य पद आए।
प्रभु भक्ती हृदय जगाएँ, इस भव से मुक्ती पाएँ॥9॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

चौपाई

गर्भ चिन्ह माँ के उर आये, देव रत्न वृष्टी करवाए।
माघ कृष्ण पष्ठी शुभ गाई, उत्सव देव किए सुखदायी॥1॥

ॐ ह्रीं माघकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक कृष्ण त्रयोदशि पाए, सुर नर इन्द्र सभी हर्षाए।
जन्मोत्सव मिल इन्द्र मनाए, आनन्दोत्सव श्रेष्ठ कराए॥2॥

ॐ ह्रीं कार्तिक कृष्णा त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक वदि तेरस शुभकारी, संयम धार हुए अनगारी।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, जग जंजाल छोड़ वन आए॥3॥

ॐ ह्रीं कार्तिककृष्णा त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत शुक्ल की पूनम पाए, विशद ज्ञान प्रभु जी प्रगटाए।
धर्म देशना आप सुनाए, इस जग को सत्पथ दिखलाए॥4॥

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन शुक्ल चतुर्थी भाई, के दिन प्रभु ने मुक्ती पाई।
अपने सारे कर्म नशाए, तज संसार वास शिव पाए॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पद्मप्रभु जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– पद्मासन पद में पदम, पद्म प्रभु भगवान।
जयमाला गाते विशद, पाने शिव सोपान॥

(मानव छन्द)

चरण में भक्ती से शत् इन्द्र, झुकाते प्रभु चरणों में शीश।
कहाए पद्मप्रभु भगवान, जगत में जगती पति जगदीश॥1॥
अनुत्तर वैजयन्त से आप, चये कौशाम्बी नगरी आन।
धरण नृप रही सुसीमा माता, गर्भ में कीन्हे आप प्रयाण॥2॥
दाहिने पग में कमल का चिन्ह, इन्द्र ने देख दिया शुभ नाम।
कराए न्हवन मेरु पे इन्द्र, चरण में कीन्हे सभी प्रणाम॥3॥
जगा प्रभु के मन में वैराग, सकल संयम धर हुए मुनीश।
ऋद्धियाँ प्रगटी अपने आप, अतः कहलाए आप ऋशीष।4॥
स्वयंभू बनकर के भगवान, जगाए अनुपम केवलज्ञान।
रचाएँ समवशरण तब देव, रहा विधि का कुछ यही विधान॥5॥
पूर्ण कर आयू कर्म अशेष, किए सब कर्मो का प्रभु नाश।
समय इक में सिद्धालय जाय, वहाँ पर कीन्हे आप निवास॥6॥

दोहा– प्रभु अनन्त ज्ञानी हुए, गुण अनन्त की खान।
गुण गाते निज भाव से, मिले मुक्ति का यान॥

ॐ ह्रीं श्री पद्मप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– इन्द्रिय जेता आप हो, बने आप भगवान।
अतः इन्द्र शत आपका, करें 'विशद' गुणगान॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री सुपार्श्वनाथ जिन पूजन-7

स्थापना

जिन सुपार्श्व का दर्श कर, जागे उर श्रद्धान।
आओ तिष्ठो मम हृदय, करते हम आह्वान॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई छन्द)

शीतल जल भरके हम लाए, जिन पद में त्रयधार कराए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी॥1॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यह भवताप नशाए, अर्चा करने को हम लाए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी॥2॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यहाँ चढ़ाने लाए, अक्षय पद पाने हम आए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी॥3॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प लिए यह मंगलकारी, काम रोग के नाशनकारी।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी॥4॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चरु से जिन पद पूज रचाते, विशद भाव से महिमा गाते।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी॥5॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का जगमग दीप जलाए, मोह नाश मेरा हो जाए।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी॥6॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित धूप जला हर्षाएँ, अष्टकर्म से मुक्ती पाएँ।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी॥7॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल यह चढ़ा रहे शुभकारी, मुक्ती पद दायक मनहारी।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी॥8॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य चढ़ाएँ, पद अनर्घ्य पाके शिव जाएँ।
पूज रहे तव पद हम स्वामी, जिन सुपार्श्व हे! अन्तर्यामी॥9॥

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

षष्ठी सित भादों पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।
उत्सव सब देव मनाए, जिन गृह आके हर्षाए।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्रपक्षशुक्ला षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशी जेठ सित गाई, जन्मे सुपार्श्व जिन भाई।
जन्मोत्सव इन्द्र मनाए, जिनवर का न्हवन कराए।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादशां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशी जेठ सित स्वामी, संयम धारे जगनामी।
वैराग्य हृदय में छाया, भोगों से मन अकुलाया।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि छठी निराली, फैलाए ज्ञान की लाली।
अज्ञान के मेघ हटाए, केवल रवि जिन प्रगटाए।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फाल्गुन वदि सातें जानो, जिन वर शिव पाए मानो।
सम्मेद शिखर से स्वामी, प्रभु बने मोक्ष पथगामी।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तयां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– नाथ सुपारस आपकी, गाए जो जयमाल।
भक्ति जगाए निज हृदय, होवे वही निहाल।।

(ताटंक छन्द)

मध्यम ग्रीवक से चय प्रभु ने, नगर बनारस जन्म लिया।
सुप्रतिष्ठ राजा पृथ्वीमति, माँ को तुमने धन्य किया।।1।।
जन्मोत्सव पर शत् इन्द्रों ने, मेरु पे न्हवन कराया था।

स्वस्तिक चिन्ह देख सुरपति ने, नाम सुपार्श्व बताया था।।2।।
तीस लाख पूरव की आयू, तन का वर्ण हरित पाए।
दो सौ धनुष रही ऊँचाई, सहस्राष्ठ शुभगुण गाए।।3।।
पतझड़ देख भावना भाके, प्रभु वैराग्य जगाए थे।
अनुमोदन करने लौकान्तिक, ब्रह्म स्वर्ग से आए थे।।4।।
मनोगती ले देव पालकी, प्रभु को वन में पहुँचाए।
सर्व परिग्रह त्याग प्रभु जी, मुनिवर की दीक्षा पाए।।5।।
उत्तम तप का कर्म नाश प्रभु, केवल ज्ञान जगाए हैं।
समवशरण में दिव्य देशना, गणधर सुर नर पाए हैं।।6।।

दोहा– तीर्थराज सम्मेद पर, जानो कूट प्रभास।
कर्म नाश शिवपुर गये, किया जहाँ पर वास।।

ॐ ह्रीं श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्तिभाव से भक्त जो, करते प्रभु गुण गान।
अल्प समय में जीव वह, पाते पद निर्वाण।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री चन्द्रप्रभु जिन पूजन-8

स्थापना

सोरठा–कांती चन्द्र समान, चन्द्र प्रभु भगवान की।
भाव सहित आह्वान, हृदय कमल में आपका।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल टप्पा)

निर्मल जल यह प्रासुक करके, हम लाए भाई।
जन्म जरादी रोग नाश हो, जो है दुखदायी।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।1।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन में केसर की खुशबू, अतिशय महकाई।
भवाताप हो नाश हमारा, चर्च रहे भाई।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।2।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत धवल मनोहर, लाए हर्षाई।
अक्षय पद पाएँ हम जिसकी, फैली प्रभुताई।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।3।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित पुष्पों ने इस जग में, महिमा दिखलाई।
जिन भक्तों ने काम रोग से, भी मुक्ती पाई।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।4।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे यह नैवेद्य बनाए, हमने सुखदायी।
क्षुधा रोग हो नाश हमारा, महिमामय भाई।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।5।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नमयी शुभ घी के दीपक, अनुपम प्रजलाई।
महामोह तम जिन अर्चा से, क्षण में नश जाई।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।6।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप अग्नि में खेने से शुभ, धूम उड़े भाई।
नशें कर्म आठों अब मेरे, जो है दुखदायी।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।7।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रेष्ठ सरस ताजे फल लाए, पावन सुखदायी
महामोक्ष फल पाय जिसकी, फैली प्रभुताई।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।8।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, हमने शुभ भाई।
पद अनर्घ्य पाने हम आए, मन में हर्षाई।।
पूजते हम जिन पद भाई।
जिन अर्चा करने वालों ने ही मुक्ती पाई।।9।। पूजते....

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चालछन्द)

पाँचे वदि चैत निराली, जिन गृह में छाई लाली।
गर्भागम देव मनाए, जिन माँ के गर्भ में आए।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा पंचम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि आई, सारी जगती हर्षाई।
सुर जन्म कल्याण मनाएँ, सब ताण्डव नृत्य कराएँ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वदि पौष एकादशि पाए, जिनवर वैराग्य जगाए।
क्षण भंगुर यह जग जाना, निजका स्वरूप पहचाना।।3।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि सातें जानो, प्रभु हुए केवली मानो।
सुर समवशरण बनवाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा सप्तम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन सुदि सातें पाई, मुक्ती वधु जो परणाई।
प्रभु सारे कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ल सप्तम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– भक्ती से भवि जीव का, कटे कर्म जंजाल।
मुक्ती पाने के लिए, गाते हैं जयमाल।।

(चाल टप्पा)

जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, चन्द्र पुरी गाई।
वैजयन्त से चयकर माँ के, गर्भ आए भाई।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।
जिनकी अर्चा कर जीवों ने, मुक्ति श्री पाई।।1।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।
गर्भागम पूरा होने पर, जन्म घड़ी आई।
न्हवन कराया शत् इन्द्रो ने, जग मंगलदायी।।2।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।
दायें पग में अर्धचन्द्र शुभ, लक्षण है भाई।
आयू लाख पूर्व दश की प्रभु, पाए सुखदायी।।3।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।
धवल रंग था धनुष डेढ़ सौ, प्रभु की ऊँचाई।
तड़ित चमकता देख प्रभू ने, जिन दीक्षा पाई।।4।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।
कर्म घातिया नाश प्रभू ने, ज्ञान निधी पाई।
धन कुबेर ने समवशरण की, रचना बनवाई।।5।।
चन्द्र प्रभ जिन मंगलदायी।

दोहा– आत्म ध्यान करके प्रभू, कीन्हे कर्म विनाश।
शिव नगरी में जा किया, सिद्ध शिला पर वास।।

ॐ ह्रीं श्री चन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्ती करते भक्तगण, होके भाव विभोर।
शिव पद के राही बनें, बढ़े मोक्ष की ओर।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पुष्पदन्त पूजन-9

स्थापना (सोरठा)

पुष्पदन्त भगवान, शिवपथ के राही बने।
करते हम आह्वान, रत्नत्रय निधि के लिए।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(रेखता छन्द)

यह चरण चढ़ाने लिया नीर, अब रोग त्रय की मिटे पीर।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

फैले चन्दन की बहु सुवास, हो भवाताप का पूर्ण नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत ले पूजा करें आज, अब मोक्ष महल का मिले ताज।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

यह पूजा करने लिए फूल, अब काम रोग का नशे मूल।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह चरू चढ़ाते हैं महान, अब क्षुधा रोग की होय हान।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम करें दीप से जग प्रकाश, अब मोह महातम होय नाश।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।6।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

शुभ खेने लाए यहाँ धूप, नश कर्म प्राप्त हो निज स्वरूप।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।7।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से हम पूजा करें देव, अब मोक्ष महाफल मिले एव।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।8।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

हम चढ़ा रहे यह श्रेष्ठ अर्घ्य, पद हम भी पाएँ शुभ अनर्घ्य।
हम पूज रहे तव चरण नाथ, दो मोक्ष मार्ग में हमें साथ।।9।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(छन्द)

फागुन कृष्णा नौमी प्रधान, प्रभु स्वर्ग से चय आये महान।
तव देव किए मिल नमस्कार, जो रत्नवृष्टि कीन्हे अपार।।1।।
ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा नवम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम विशेष, प्रभु पुष्पदन्त जन्मे जिनेश।
देवों ने कीन्हा नृत्य गान, शुभ न्हवन कराए हर्ष मान।।2।।
ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सित मार्ग शीर्ष एकम जिनेश, दीक्षा धारे जिनवर विशेष।
मन में जगा जिनके विराग, फिर किए प्रभु जी राग त्याग।।3।।
ॐ ह्रीं अगहन शुक्लाप्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कार्तिक शुक्ल द्वितिया महान, प्रगटाएँ प्रभु कैवल्य ज्ञान।
शुभ समवशरण रचना अपार, सुर किए जहाँ पर भक्ति धार।।4।।
ॐ ह्रीं कार्तिकशुक्ला द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन शुक्ला आठें ऋशीष, प्रभु सिद्ध शिला के हुए ईश।
जिनके गुण गाते हैं सुदेव, भक्ती रत रहते हैं सदैव।।5।।
ॐ ह्रीं आश्विनशुक्लाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– मंगलमय भगवान हैं, मंगल जिनका नाम।
मंगलमय जयमाल गा, करते चरण प्रणाम।।

(छन्द वेसरी)

पुष्पदन्त तीर्थकर गाए, प्राणत स्वर्ग से चयकर आये।
पितु सुग्रीव मात जयरामा, काकन्दी नगरी का नामा।।1।।
मगर चिन्ह दाँये पद पाए, इक्ष्वाकु कुल नन्दन गाए।
धनुष एक सौ ऊँचे जानो, धवल रंग तन का शुभ मानो।।2।।
दो लख पूर्व की आयु पाये, निष्कंटक प्रभु राज्य चलाए।
उल्का पात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पथ के पथगामी।।3।।
दीक्षा सहस्र भूप संग पाए, दीक्षा वृक्ष पुष्प कहलाए।
प्रभु जब केवल ज्ञान जगाए, समवशरण तब देव बनाए।।4।।
ब्रह्म आपका यक्ष कहाए, काली आप यक्षिणी पाए।
गणधर आप अठासी पाए, गणधर प्रमुख नाग कहलाए।।5।।
सर्व ऋषी दो लाख बताए, गुण छियालिस प्रभु जी के गाए।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, ''विशद'' हुए मुक्ती पथगामी।।6।।

दोहा– शुक्रारिष्ट नाशक प्रभू, पुष्पदन्त भगवान।
जीवन मंगलमय बने, करते तव गुण गान।।
ॐ ह्रीं श्री पुष्पदन्त जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– करें चरण की वन्दना, जग के सारे जीव।
शिव पद में कारण बने, पावें पुण्य अतीव।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री शीतलनाथ पूजन-10

स्थापना (सोरठा)

पाया शिव सोपान, शीतलनाथ जिनेन्द्र ने।
निज उर में आह्वान, करते हैं हम भाव से॥

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(छन्द मोतिया दाम)

चढ़ाते प्रभु यह निर्मल नीर, मिले भव सागर का अब तीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥1॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

घिसाया चन्दन यह गोशीर, मिटे अब मेरी भव की पीर।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥2॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अक्षत यहाँ महान, मिले अक्षय पद मुझे प्रधान।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥3॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प यह सुरभित लिए विशेष, चढ़ाते तव पद यहाँ जिनेश।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥4॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

बनाए चरु हमने रसदार, चाहते हम आतम उद्धार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥5॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जलाते हम यह दीप प्रजाल, ज्ञान अब जागे मेरा त्रिकाल।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥6॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

जलाएँ अग्नी में यह धूप, प्रकट हो मेरा निज स्वरूप।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥7॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

चढ़ाते ताजे फल रसदार, प्राप्त हो हमको पद अनगार।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥8॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

चढ़ाते अर्घ्य यहाँ पर आज, मिले शिवपद का अब स्वराज।
जिनेश्वर शीतलनाथ महान, विशद करते शीतल गुणगान॥9॥
ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

शुभ चैत कृष्ण आठें महान, को देव किए मिल यशोगान।
प्रभु शीतल जिनवर गर्भधार, महिमा दिखलाए सुर अपार॥1॥
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णा अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ माघ कृष्ण द्वादशी सुजान, जन्मे शीतल जिनवर महान।
शत् इन्द्र किए आके प्रणाम, जिन शीतल प्रभु का दिए नाम॥2॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु माघ कृष्ण द्वादशी वार, दीक्षावन में जा लिए धार।
जिन सर्व परिग्रह से विहीन, निज आत्मध्यान में हुए लीन॥3॥
ॐ ह्रीं माघकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ पौष कृष्ण चौदश महान, प्रकटाए प्रभु कैवल्य ज्ञान।
तब समवशरण रचना अनूप, कई देव किए पद झुके भूप॥4॥
ॐ ह्रीं पौषकृष्णा चतुर्दश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आश्विन शुक्ला आठें जिनेश, मुक्ती पद पाए हैं विशेष।
कर्मों को करके आप नाश, प्रभु सिद्धशिला पर किए वास॥5॥
ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ल अष्टमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– शीतलनाथ जिनेन्द्र का, जपें निरन्तर नाम।
जयमाला गाएँ विशद, करके चरण प्रणाम।।

(मोतिया दाम)

स्वर्ग आरण से चयकर आय, नगर महिलपुर में सुखदाय।
गर्भ पाए शीतल जिन राय, इन्द्र रत्नों की वृष्टि कराय।।1।।
पिता दृढ़रथ हैं जिनके भ्रात, प्रभू की रही सुनन्दा मात।
जन्म जब पाए जिन तीर्थेश, धरा पर खुशियाँ हुई विशेष।।2।।
मनाए जन्मोत्सव तब देव, करें जिनवर की जो नित सेव।
कल्पतरु लक्षण रहा महान, आयु इक लाख पूर्व की मान।।3।।
प्राप्त करके पद युवराज, चलाया कई वर्षों तक राज।
देखकर हिम का प्रभू विनाश, किए निज आतम का आभास।।4।।
स्वयंभू जिन ने दीक्षाधार, किया कर्मों को प्रभु ने क्षार।
जगाया अनुपम केवल ज्ञान, प्रभू ने किया जगत कल्याण।।5।।
प्रथम गणधर का कुन्थू नाम, सतासी गणधर करें प्रणाम।
कूट विद्युतवर से जिनराज, प्राप्त कीन्हे शिवपुर का ताज।।6।।

दोहा– कर्म शृंखला नाशकर, हुए मोक्ष के ईश।
जिनके चरणों में 'विशद', झुका रहे हम शीश।।

ॐ ह्रीं श्री शीतलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– जैनागम जिन धर्म के, विशद आप आधार।
भक्त चरण वन्दन करें, कर दो भव से पार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री श्रेयांसनाथ पूजन-11

स्थापना

सोरठा– श्रेय प्रदाता आप, श्री श्रेयान्स जिन गाए हैं।
करते हैं हम जाप, आह्वानन् कर निज हृदय।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पद्धरि छन्द)

हम चढ़ा रहे यह शुद्ध नीर, जन्मादि रोग की मिटे पीर।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।1।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन केसर को लिया साथ, भव ताप नाश हो मेरा नाथ।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।2।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत यह लाए धवल आज, अक्षय पद का अब मिले ताज।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।3।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्पों के अर्पित करें थाल, हम झुका रहे तव चरण भाल।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।4।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य चढ़ाने लिए हाथ, अब क्षुधा से मुक्ती मिले नाथ।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।5।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम जला रहे हैं यहाँ दीप, अब पहुँचे शिव पद के समीप।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।6।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अब नाश होय प्रभु मोह पास, शिवपुर में मेरा होय वास।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।7।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चढ़ा रहे हम यहाँ आन, अब मिले शीघ्र ही मोक्ष धाम।
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।8।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

यह अर्घ्य चढ़ाते हम अनूप, प्रगटाएँ अपना निज स्वरूप
जिन श्रेय करें श्रेयस प्रदान, हम अतः चरण करते प्रणाम।।9।।

ॐ ह्रीं श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

पाए गर्भ भगवान्, ज्येष्ठ कृष्ण छठवी दिना।
किए देव गुणगान, उत्सव कीन्हे गर्भ का।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा षष्ठम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

हुआ जन्म कल्याण, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
इन्द्र स्वर्ग से आन, न्हवन कराए मेरु पे।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीक्षा धारे नाथ, फाल्गुन कृष्ण एकादशी।
चरण झुकाएँ माथ, सुर नर मुनि के इन्द्र सब।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनकृष्णा एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पाए केवल ज्ञान, माघ कृष्ण की अमावस।
किए जगत कल्याण, दिव्य देशना आप दे।।4।।

ॐ ह्रीं माघकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोक्ष गये भगवान, श्रावण शुक्ला पूर्णिमा।
पाए मोक्ष कल्याण, तीर्थराज सम्मेद से।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावणशुक्ला पूर्णिमायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री श्रेयांसनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– श्रेय प्रदायक श्रेयजिन, हुए जो मंगलकार।
जयमाला गाते चरण, भविजन बारम्बार।।

(चाल छन्द)

श्रेयांस नाथ गुणधारी, इसजग में मंगलकारी।
है सिंहपुरी शुभकारी, जन्मे श्रेयांस त्रिपुरारी।।1।।
नृप विष्णूराज कहाए, माँ वेणू देवी पाए।
यह अन्तिम गर्भ कहाए, प्रभु जन्म कल्याणक पाए।।2।।
किए रत्नवृष्टी शुभकारी, सुर किए प्रशंसा भारी।
गेण्डा लक्षण शुभ पाए, तन अस्सी धनुष का पाए।।3।।
चौरासी वर्ष की स्वामी, आयू पाए शिवगामी।
लक्ष्मी बसन्त विनशाई, लख मुनिवर दीक्षा पाई।।4।।
तब देव पालकी लाए, प्रभु को वन में पहुँचाए।
प्रभु आतम ध्यान लगाए, फिर केवल ज्ञान जगाए।।5।।
सुर समवशरण बनवाए, सात योजन का जो गाए।
प्रभु दिव्य ध्वनी सुनाए, सुर नर पशु मंगल गाए।।6।।

दोहा– कर्म नाशकर के प्रभू, पाए पद निर्वाण।
भव्य जीव जिनका 'विशद', करें श्रेष्ठ गुणगान।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्रीवासुपूज्य पूजन-12

स्थापना (सोरठा)

वासुपूज्य भगवान, जगत पूज्यता पाए हैं।
हृदय करें आह्वान, पूजा करने के लिए।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

दोहा

जिन चरणों में नीर की, देते हम त्रय धार।
रोग त्रय का नाशकर, पाएँ भवदधि पार।।1।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिरि चन्दन घिसा, चढ़ा रहे हम नाथ।
भव से मुक्ती दीजिए, झुका रहे हम माथ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय अक्षत के यहाँ, भर लाए हम थाल।
अक्षय पद पाएँ प्रभू, गाते हैं गुणमाल।।3।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते भाव से, काम रोग हो नाश।
मुक्ती हो संसार से, पाए शिव पद वास।।4।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

चढ़ा रहे नैवेद्य यह, तुम चरणों भगवान।
क्षुधा रोग का नाश हो, पाएँ पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का यह दीपक लिया, करके यहाँ प्रजाल।
ज्ञान दीप जगमग जले, गाते हम जयमाल।।6।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाते आग में, फैले श्रेष्ठ सुगंध।
अष्ट कर्म का नाश हो, पाएँ आत्मानन्द।।7।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा करने लाए यह, उत्तम फल रसदार।
विशद भावना भा रहे, पाएँ हम शिव द्वार।।8।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का भाव से, चढ़ा रहे यह अर्घ्य।
यही भावना है विशद, पाएँ सुपद अनर्घ्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

सोरठा

हो गई माला–माल, षष्ठी कृष्ण अषाढ़ की।
दीन दयाल कृपाल, गर्भ कल्याणक पाए थे।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्ण षष्ठीयां गर्भमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जन्मे जिन भगवान्, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
इन्द्र किए गुणगान, आनन्दोत्सव तव किए।।2।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां जन्ममंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पकड़ी शिव की राह, फाल्गुन कृष्णा चतुर्दशी।
छोड़ी जग की चाह, संयम धारा आपने।।3।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण चतुर्दश्यां तपोमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया नाश, शिव पद के राही बने।
कीन्हे ज्ञान प्रकाश, भादों शुक्ला दोज को।।4।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल द्वितीयायां ज्ञानमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठों कर्म विनाश, जिन श्रेयांस जी ने किए।
सिद्ध शिला पर वास, सुदी चतुर्दशी भाद्र पद।।5।।

ॐ ह्रीं भाद्रपद शुक्ल चतुर्दश्यां मोक्षमंगल मण्डिताय श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जगत पूज्यता पाए हैं, वासुपूज्य भगवान।
हर्षित हो सुर नर मुनी, करते हैं जयगान।।

(ज्ञानोदय छन्द)

महाशुक्र से चयकर स्वामी, चम्पापुर में आये थे।
इन्द्राज्ञा से देवों ने तव, दिव्य रत्न बरसाए थे।।1।।
जयावती माता है जिनकी, वसूपूज्य है पिता महान।
इक्ष्वाकु शुभ वंश आपका, भैंसा चिन्ह रही पहिचान।।2।।
गर्भागम को पूर्ण किए प्रभु, जन्म कल्याणक तब पाए।
न्हवन कराया मेरुगिरी पर, देव सभी मंगल गाए।।3।।
लाख बहत्तर पूर्व की आयू, सात धनुष ऊंचाई जान।
बाल ब्रह्मचारी कहलाए, जाति स्मरण पाए महान।।4।।

दीक्षा धारण किए प्रभू जी, छह सौ राजाओं के साथ।
केवलज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए आप त्रैलोकी नाथ।।5।।
छियासठ गणधर रहे प्रभु के, मंदर जिनमें रहे प्रधान।
कर्म नाशकर चम्पापुर से, पाए प्रभु जी पद निर्वाण।।6।।

दोहा– चम्पापुर में आपके, हुए पञ्च कल्याण।
भक्त पुकारें आपको, दो प्रभु जी अब ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्ती से मुक्ती मिले, कहते ऐसा लोग।
'विशद' भक्ति का हे प्रभू, दो हमको अब योग।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री विमलनाथ पूजन-13

स्थापना (सोरठा)

विमलनाथ तीर्थेश, शिव पदवी को पाए हैं।
धारा दिगम्बर भेष, अतः बुलाते निज हृदय।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चौपाई)

नाथ आपको हम सब ध्याते, चरणों में यह नीर चढ़ाते।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सेवक बनकर हम सब आये, चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

भक्त बने भक्ती को आये, अक्षय पद को अक्षत लाए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाकर हम हर्षाएँ, काम रोग को पूर्ण नशाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नशाने को हम आए।।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप जलाते हम हे स्वामी, मोहनाश करने शिवगामी।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुरभित हम यह धूप जलाएँ, अपने आठों कर्म नशाएँ।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल यह यहाँ चढ़ाने लाए, हम शिव फल पाने को आए।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

शुभ यह अर्घ्य चढ़ाते भाई, जो है शुभ मुक्ती पद दायी।।
शिव पथ के राही बन जाएँ, मुक्ती पद को हम भी पाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सुखमा छन्द)

जेठ कृष्ण दशमी दिन पाए, नगर कम्पिल धन्य बनाए।
जयश्यामा के गर्भ में आए, देव रत्न वृष्टी करवाए।।1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल की चौथ बताई, जन्मे विमलनाथ जिन भाई।
जन्म कल्याणक देव मनाए, खुश हो जय जयकार लगाए।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल की चौथ कहाई, दीक्षा कल्याणक तिथि गाई।
मन में प्रभु वैराग्य जगाए, शिवपथ के राही कहलाए।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ल चतुर्थ्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल छठ रही सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, जीवों को सन्मार्ग दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ल षष्ठम्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छठी कृष्ण आषाढ़ बखानी, प्रभु जी पाए मुक्ती रानी।
गिरि सम्मेद शिखर से स्वामी, बने मोक्ष पथ के अनुगामी।।5।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णाऽष्टम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– विमलनाथ भगवान हैं, विमल गुणों की खान।
जिन गुण माला गाए वह, पाए केवलज्ञान।।

(वीरछन्द)

हे वीतराग सर्वज्ञ प्रभो! हमने तुमको ना पहिचाना।
इसलिये चौरासी के चक्कर, पड़ रहे अनादी से खाना।।1।।
तुम करुणा निधि हो हे स्वामी, हम द्वार आपके आये हैं।
चारों गतियों में दुख पाए, हम उनसे अब घबराए हैं।।2।।
तुम विमल गुणों के धारी हो, तुमने सत् संयम पाया है।
निज ध्यान अग्नि में हे स्वामी, कर्मों को पूर्ण जलाया है।।3।।
शत् संयम जो धारण करते, वे केवलज्ञान जगाते हैं।
वह कर्म घातिया नाश करें, फिर अनन्त चतुष्टय पाते हैं।।4।।
भगवान आपकी वाणी में, तत्त्वों का सार बताया है।
शुभ अनेकांत अरु स्याद्वाद, शत् समयसार समझाया है।।5।।
शुभ कर्म किए सुख पाएँगे, हमने अब तक ऐसा जाना।
है वीतराग शुभ धर्म 'विशद' उसको अब तक ना पहिचाना।।6।।

दोहा– वीतराग जिन धर्म को, धार बने अनगार।
कर्मनाशकर जीव सब, करें आत्म उद्धार।।

ॐ ह्रीं श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– श्रद्धा से जिन दर्श पा, जिनवाणी से ज्ञान।
'विशद' साधना कर सदा, पावें पद निर्वाण।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री अनन्तनाथ पूजन-14

स्थापना

सोरठा– गुणानन्त के कोश, अनन्त नाथ भगवान हैं।
जीवन हो निर्दोष, आह्वानन् करते अतः।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

जल पीकर भी बुझ सकी नहीं, मेरे जीवन की प्यास कभी।
जल पीते पीते युग बीते, फिर भी मन रहा उदास अभी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

सूरज से भी ज्यादा गर्मी, मेरे इस तन मन में छाई हैं।
चन्दन क्या शीतलता देगा, जब धन की आस लगाई हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पद है दुनियाँ में अनगिनते, क्षण क्षण में क्षय हो जाते हैं।
यह पद पाने को जग प्राणी, मन में आकुलता पाते हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

क्षण भंगुर यह जीवन गाया, हम समझ नहीं यह पाए हैं।
जो चतुर्गती का कारण है, वह चक्र काटने आए हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

व्यंजन खाकर के कई हमने, नश्वर काया को पुष्ट किया।
आनन्द आत्मरस का हमने, शाश्वत होता जो नहीं लिया।।5।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

तम हरने वाला है दीपक, जो नाश मोह ना कर पाए।
होवे प्रकाश निज चेतन में, जो दीप ज्ञान का प्रजलाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में गंध जलाई है, पर कर्म नहीं जल पाए हैं।
जिसने निज आतम को ध्याया, उसने सब कर्म नशाए हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जीव कर्म का फल पाते, जिनवाणी में यह गाया है।
जो शुक्ल ध्यान में लीन हुए, उनने शाश्वत फल पाया है।।8।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।
हम भूले निज की शक्ती को, कर्मों ने दास बनाया है।
हे नाथ आपकी महिमा सुन, यह राज समझ में आया है।।9।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सुखमाछन्द)

कार्तिक वदि एकम तिथि जानो, गर्भागम प्रभु का पहिचानो।
देव रत्न वृष्टी करवाए, माँ के गर्भ का शोध कराए।।1।।
ॐ ह्रीं कार्तिक प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण द्वितिया तिथि आयी, नगर अयोध्या बजी बधाई।
जन्मोत्सव तव देव मनाए, नृत्य गान कर बाद्य बजाये।।2।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण बारस शुभकारी, दीक्षा धार हुए अनगारी।
देव पालकी स्वर्ग से लाए, प्रभु को दीक्षा वन पहुँचाए।।3।।
ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णा द्वादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावश को जिन स्वामी, ज्ञान जगाए अन्तर्यामी।
सुर नर जय-जय कार लगाए, चरणों में नत शीश झुकाए।।4।।
ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत अमावश तिथि शुभकारी, हुए प्रभू मुक्ती पथ धारी।
अपने आठों कर्म नशाए, मोक्ष महल में धाम बनाए।।5।।
ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जिनानन्त भगवान हैं, गुण अनन्त की खान।
गुण माला गाते विशद, करने निज कल्याण।।

(सखी छन्द)

चय अच्युत स्वर्ग से आये, इक्ष्वाकुवंशी गाए।
सिंहसेन पिता कहलाए, माँ सूर्ययशा जिन पाए।।1।।
शुभ कौशल देश कहाए, प्रभु नगर अयोध्या आये।
तव स्वर्ग समान बताया, लक्षण सेही कहलाया।।2।।
आयू पचास लख पूरव, जिन धनुष पचास अपूरव।
प्रभु उल्का पतन निहारे, जग से विरागता धारे।।3।।
दीक्षा लेने वन आए, इक सहस भूप संग पाए।
जब कर्म घातिया नाशे, तव केवल ज्ञान प्रकाशे।।4।।
गणधर पचास जिन पाए, जय प्रथम गणी कहलाए।
है यक्ष सुकिन्नर भाई, यक्षी वैरोटी गाई।।5।।
सम्मेद शिखर प्रभु आये, शिव स्वयंप्रभु कूट से पाए।
हम 'विशद' ज्ञान शुभ पाएँ, सिद्धों में धाम बनाए।।6।।

दोहा– गुण गाते हम आपके, गुण पाने भगवान।
जिन ने गुण प्रगटाए वह, पद पाए निर्वाण।।
ॐ ह्रीं श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– हैं अनन्त गुण आपके, महिमा का ना पार।
भक्ती कर पाएँ प्रभू, इस जीवन का सार।।
।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री धर्मनाथ पूजन-15

स्थापना (चाल छन्द)

जिन धर्म नाथ शिवगामी, मुक्ती पद पाए स्वामी।
उनको निज हृदय बुलाते, आह्वानन कर तिष्ठाते।।
ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(केसरी छन्द)

निर्मल जल से कलश भरीजे, जिन पद में त्रयधारा दीजे।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन में केसर घिस लीजे, जिन चरणों की अर्चा कीजे।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत के शुभ थाल भराएँ, अक्षय पद पाके शिव पाएँ।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाकर पूजा कीजे, काम रोग अपना हर लीजे।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे शुभ नैवेद्य चढ़ाएँ, क्षुधारोग को पूर्ण नशाएँ।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत के शुभकर दीप जलाएँ, मोह तिमिर से मुक्ती पाएँ।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप जलाएँ हम शुभकारी, अष्टकर्म की नाशन कारी।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूजा करने को फल लाए, मोक्ष महाफल पाने आए।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य दायक शुभकारी, अर्घ्य चढ़ाते मंगलकारी।
धर्मनाथ पद शीश झुकाएँ, विशद भाव से महिमा गाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(वेसरी छन्द)

सित वैशाख अष्टमी गाए, धर्म नाथ जी गर्भ में आए।
रत्नपुरी में रत्न सुवर्षे, सुरनर सभी वहाँ पे हर्षे।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला अष्टम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माघ शुक्ल तेरस शुभकारी, जन्म लिए भू पे त्रिपुरारी।
पाण्डुक वन अभिषेक कराए, देव सभी जयकार लगाये।।2।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उल्कापात देखकर स्वामी, बने मोक्ष पद के पथगामी।
माघ शुक्ल तेरस तिथि गाई, दीक्षा की पावन घड़ि आई।।3।।

ॐ ह्रीं माघशुक्ला त्रयोदश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्म घातिया आप नशाए, ऋद्धि सिद्धियाँ स्वामी पाए।
केवल ज्ञान का दीप जलाए, मुक्ती पथ की राह दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं पौषशुक्ला पूर्णिमायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज स्वभाव में रमने वाले, कर्म नाश शिवपुर को चाले।
ज्येष्ठ शुक्ल की चौथ बताई, गिर सम्मेद शिखर से भाई।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठशुक्ला चतुर्थ्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– धर्म धुरन्धर धर्मधर, विशद धर्म के ईश।
जयमाला गाते चरण, झुका भाव से शीश।।

(जोगीरासा छन्द)

भरत क्षेत्र में अंग देशशुभ, रत्नपुरी शुभ गाई।
सर्वार्थ सिद्धि से चयकर आये, धर्मनाथ जिन भाई।।1।।

भानुराय हैं पिता आपके, मात सुव्रता पाये।
कुरू वंश के स्वामी अनुपम, कश्यप गोत्री गाए।।2।।
हुआ जन्म तव देव यहाँ पर, जन्म कल्याण मनाए।
मेरुगिरी पे न्हवन कराके, हर्षे नाचे गाये।।3।।
धनुष पैंतालिस है ऊचाई, स्वर्ण वर्ण तुम पाए।
आयू लाख वर्ष दश की है, वज्रदण्ड पद गाए।।4।।
उल्का पात देखकर स्वामी, जग से हुए विरागी।
निज आतम का ध्यान लगाए, ज्ञान किरण तव जागी।।5।।
पाँच योजन का समवशरण तब, आके देव बनाए।
भव्य जीव तव दिव्य ध्वनी सुन, शत् श्रद्धान जगाए।।6।।

दोहा– कर्म नाशकर आपने, पाया पद निर्वाण।
तव पद के राही बनें, दो ऐसा वरदान।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– धर्मनाथ जी धर्म की, बहा रहे हैं धार।
अवगाहन कर जीव कई, होते भव से पार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री शांतिनाथ पूजन-16

स्थापना (सखी छन्द)

हैं शांतिनाथ शिवकारी, इस जग में मंगलकारी।
निज उर में हम तिष्ठाएँ, पूजा करके सुख पाएँ।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(केसरी छन्द)

प्रासुक हमने नीर कराया, शिवपद पाने यहाँ चढ़ाया।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।1।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दन यहाँ चढ़ाने लाए, भव सन्ताप नाश हो जाए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।2।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हमने यहाँ चढ़ाए, अक्षय पद पाने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।3।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

पुष्प चढ़ाते यह शुभकारी, काम नाश हो हे त्रिपुरारी
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।4।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाने लाए, क्षुधा नाश करने हम आए।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।5।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह तिमिर का नाशनकारी, दीप चढ़ाते मंगलकारी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।6।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में यह धूप जलाएँ, कर्म नाश सारे हो जाएँ।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।7।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से पूज रहे जिनस्वामी, हम भी बने मोक्ष पथ गामी।
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।8।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्घ्य चढ़ाकर हम हर्षाएँ, पद अनर्घ हम भी पा जाएँ
यही भावना विशद हमारी, पाएँ मुक्ती हे त्रिपुरारी।।9।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

भादों कृष्ण सप्तमी जानो, प्रभू गर्भ में आये मानो।
दिव्य रत्न खुश हो वर्षाए, देव सभी तब हर्ष मनाए।।1।।

ॐ ह्रीं भाद्र पद कृष्ण सप्तमयां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस को स्वामी, जन्मे शांतिनाथ शिवगामी।
सारे जग ने हर्ष मनाया, जिनवर का जयकारा गाया।।2।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण की चौदस भाई, शांतिनाथ जिन दीक्षा पाई।
जिनके मन वैराग्य समाया, छोड़ चले इस जग की माया।।3।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां तपोकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष शुक्ल दशमी शुभकारी, विशद ज्ञान पाये त्रिपुरारी।
ॐकार मय ध्वनि गुंजाए, भव्यों को शिवराह दिखाए।।4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ल दशम्यां केवल ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्येष्ठ कृष्ण चौदस शुभ गाई, शांतिनाथ जिन मुक्ती पाई।
प्रभु ने सारे कर्म नशाए, शिवपुर अपना धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्ण चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– शांति प्रदायिक शांति जिन, तीनों लोक त्रिकाल।
जिनकी गाते भाव से, नत होके जयमाल।।

(छन्द-तामरस)

चिच्चेतन गुणवान नमस्ते, गुण अनन्त की खान नमस्ते।
शांतिनाथ भगवान नमस्ते, वीतराग विज्ञान नमस्ते।।1।।
सम्यक् श्रद्धाधार नमस्ते, विशद ज्ञान के हार नमस्ते।
सम्यक् चारित वान नमस्ते, तपधारी गुणवान नमस्ते।।2।।
जगती पति जगदीश नमस्ते, ऋद्धी धार ऋशीष नमस्ते।
गर्भ कल्याणक वान नमस्ते, प्राप्त जन्म कल्याण नमस्ते।।3।।
तप कल्याणक धार नमस्ते, केवल ज्ञानाधार नमस्ते।
मोक्ष महल के ईश नमस्ते, वीतराग धारीश नमस्ते।।4।।

जन्म के अतिशय वान नमस्ते, ज्ञान के भी दश जान नमस्ते।
देवों के शुभकार नमस्ते, प्रातिहार्य भी धार नमस्ते।।5।।
अनन्त चतुष्टय वान नमस्ते, शुभ छियालिस गुणवान नमस्ते।
करके आतम ध्यान नमस्ते, पाए पद निर्वाण नमस्ते।।6।।

दोहा– शांति के हैं कोष जिन, शांती के आधार।
विशद शांति पाए स्वयं, शांति के दातार।।

ॐ ह्रीं श्री शांतिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– शांती पाने के लिए, भक्त खड़े हैं द्वार।
सुनो प्रार्थना हे प्रभो! बोलें जय-जयकार।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री कुन्थुनाथ पूजन-17

स्थापना (चाल छन्द)

हैं कुन्थुनाथ अविकारी, जिनकी है महिमा न्यारी।
जिनको हम पूज रचाते, अपने उर में तिष्ठाते।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(स्रग्विणी छन्द) (लक्ष्मीधरा छन्द)

नीर निर्मल से झारी भरा लाए हैं,
रोग जन्मादी के नाश को आए हैं।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।1।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

केशरादी से हमने कटोरी भरी,
जिन प्रभू पाद में आन चर्चन करी
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।2।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

दुग्ध के फैन सम श्वेत अक्षत लिए,
आत्मनिधि प्राप्त हो पुंज रचना किए।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।3।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

बाग से फूल चुनकर यहाँ लाए हैं,
काम का रोग हरने शरण आए हैं।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।4।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

ताजे नैवेद्य हम यह चढ़ाते अहा,
क्षुधा व्याधी नशे लक्ष्य मेरा रहा।।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।5।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

प्रज्ज्वलित दीप लेके करें आरती,
हृदय जागे मेरे ज्ञान की भारती।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।6।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप दश गंध ले अग्नि में जारते,
कर्म शत्रू प्रभु आप ही निवारते।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।7।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल ये ताजे सरस थाल भर लाए हैं,
मोक्ष पद प्राप्त हो भावना भाए हैं।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।8।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि से स्वर्ण थाली भरें,
नाथ पद पूजते, सर्वसिद्धी करें।
कुन्थु जिनवर की पूजा रचाते सही,
प्राप्त हो हमको हे नाथ अष्टम मही।।9।।

ॐ ह्रीं श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(तोटक छन्द)

श्रावण कृष्ण दशें को भाई, गर्भ में आए कुन्थु जिनेश।
दिव्य रत्न देवों ने आकर, पृथ्वी पर वर्षाए विशेष।।1।।

ॐ ह्रीं श्रावणकृष्णा दशम्यां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एकम सुदि वैशाख बताई, नगर हस्तिनापुर शुभकार।
जन्म कल्याणक देव मनाए, हुई धरा पर जय जयकार।।2।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुक्ल पक्ष वैशाख सु एकम, दीक्षा धारे कुन्थूनाथ।
कामदेव चक्री पद छोड़ा, तीर्थकर पद पाए सनाथ।।3।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत्र शुक्ल की तृतिया जानो, प्रगटाए प्रभु केवल ज्ञान।
इन्द्र शरण में आये मिलकर, समवशरण सुर रचे महान।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला तृतीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदि वैशाख तिथी एकम को, कीन्हें प्रभु जी कर्म विनाश।
कूट ज्ञानधर से जिन स्वामी, सिद्ध शिला पर कीन्हे वास।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला प्रतिपदायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री कुन्थुनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– त्रयपद धारी जिन हुए, कुन्थुनाथ भगवान।
जयमाला वर्णन करें, करने प्रभु गुणगान॥

(कुसुमलता छन्द)

जम्बुद्वीप में नगर हस्तिना पुर गाया है मंगलकार।
सूरसेन राजा कहलाए, रानी श्री मती मनहार॥1॥
सर्वार्थ सिद्धि से चयकर आये, गर्भागम पाए भगवान।
रत्न वृष्टि की तव देवों ने, प्रभु फिर पाए जन्म कल्याण॥2॥
इन्द्र राज ने मेरुगिरी पर, न्हवन कराया मंगलकार।
बकरा चिन्ह देखकर बोला, कुन्थुनाथ का जय-जयकार॥3॥
सहस पंचानवे वर्ष की आयू, तन पाए प्रभु स्वर्ण समान।
पैंतिस धनुष रही ऊँचाई, प्रभू जगाए भेद विज्ञान॥4॥
विजया लाए देव पालकी, वन में जाके कीन्हा ध्यान।
कर्म घातिया नाश किए प्रभु, प्रगटाए तव केवल ज्ञान॥5॥
चार योजन का समवशरण था, दिव्य देशना दिए महान।
भव्य जीव श्रद्धान जगाए, संयम धारे चरणों आन॥6॥

दोहा– सर्वकर्म का नाशकर, पाए पद निर्वाण।
सुर नरेन्द्र नर चरण में, विशद करें गुणगान॥

ॐ ह्रीं श्री कुंथुनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– महिमा जिनकी अगम है, अगम है जिनका ज्ञान।
अगम भक्ति करके मिले, जीवों को निर्वाण॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री अरहनाथ पूजन-18

स्थापना (सखी छन्द)

जिनराज अरह कहलाए, जग को सन्मार्ग दिखाए।
आह्वानन् करते भाई, जो हैं शिव सौख्य प्रदायी॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(स्रग्विणी छन्द)

नीर गंगा का निर्मल सुगन्धित लिया,
जिन प्रभू के चरण में समर्पित किया।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥1॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

चन्दनादिक से प्रभु के चरण चर्चते,
दाह हो नाश भव की प्रभू अर्चते।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥2॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

शालि के पुञ्ज से पूजते नाथ को,
सुपद अक्षय में हमको प्रभू साथ दो।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥3॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

खिले सुरभित सुमन आज आए लिए,
शील गुण के हृदय में जलें अब दिए।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥4॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सद्य नैवेद्य लाए यहाँ थाल में,
पूजते आत्म तृप्ती हो तत्काल में।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥5॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप की ज्योति फैला सुतम वारती,
आरती कर वरें ज्ञान की भारती।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण॥6॥

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप खेते सुगन्धी हो आकाश में,
कर्म के नाश करने की हम आस में।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।7।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल चढ़ाते चरण में ये ताजे प्रभो!
मोक्ष की आश पूरी हो मेरी विभो।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।8।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

आठ द्रव्यों का शुभ अर्घ्य हम यह किए,
प्राप्त शाश्वत सुपद हो हमारे लिए।
अरह जिनकी हमें प्राप्त होवे शरण,
पूजते भाव से हम श्री जिन चरण।।9।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(मानव छन्द)

सुदी फागुन तृतिया शुभकार, गर्भ में आए अरह जिनेश।
दिव्य वर्षाए रत्न अपार, धरा पे आके इन्द्र विशेष।।1।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला तृतीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि चतुर्दशी भगवान, जन्म ले किए जगत कल्याण।
बजाए भाँति-भाँति के वाद्य, बधाई किए नगर में आन।।2।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला चतुर्दश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगा जिनके मन में वैराग, त्याग कर चले स्वजन परिवार।
रहा ना जिनके मन में राग, दशे सुदि मंगसिर तिथि शुभकार।।3।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी कार्तिक द्वादशी महान, प्रभु जी पाए केवल ज्ञान।
किए प्रभु जग में ज्ञान प्रकाश, बने तव भक्त चरण के दास।।4।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाद्वादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अमावस चैत कृष्ण की खास, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
किए शिवपुर को प्रभू प्रयाण, किया शिवपुर में प्रभु ने वास।।5।।

ॐ ह्रीं चैत्रकृष्णाऽमावस्यायां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– आप हमारे देवता, आप हमारे नाथ।
गुणमाला गाते-चरण, झुका भाव से माथ।।

(पाईता छन्द)

प्रभु अरहनाथ कहलाए, जो स्वर्ग से चयकर आए।
पितु भूप सुदर्शन जानो, माता मित्रावति मानो।।1।।
है गजपुर नगरी प्यारी, इक्ष्वाकु कुल मनहारी।
स्वर्गो से सुर बालाएँ, जो गर्भ को शोध कराएँ।।2।।
जब गर्भ में प्रभु जी आए, इस जग में मंगल छाए।
जब जन्म प्रभु जी पाए, सुर जन्म कल्याण मनाए।।3।।
प्रभु राज्य सम्पदा पाए, त्रयपद के धारी गाए।
चक्री के भोग ना भाए, सब छोड़ के दीक्षा पाए।।4।।
आतम का ध्यान लगाए, तब घाती कर्म नशाए।
फिर केवल ज्ञान जगाए, दिव्य ध्वनि आप सुनाए।।5।।
जग को सन्मार्ग दिखाए, मुक्ति श्री जिनवर पाए।
जो रत्नत्रय शुभ पाते, वे मोक्ष महल को जाते।।6।।

दोहा– जिनवर हैं इस लोक में, शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध।
पाए परमान्द जिन, निज आतम कर शुद्ध।।

ॐ ह्रीं श्री अरहनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– धन्य धन्य यह शुभ घड़ी, जिन पूजा की आज।
सुख सम्पति सौभाग्य हो, मिले मोक्ष साम्राज्य।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मल्लिनाथ पूजन-19

स्थापना (चाल छन्द)

जो मल्लिनाथ को ध्याते, वे विजय मोह पर पाते।
आह्वानन करने वाले, होते है जीव निराले।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(अर्ध शम्भू छंद)

निज अनुभव अमृत जल पीकर, त्रिविध ताप का शमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।1।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

निज गुण का शीतल चंदन पा, भवाताप का हरण करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।2।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

मोती सम अक्षय अक्षत यह, श्री जिनेन्द्र के चरण धरें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।3।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

जिसके कारण जग में भटके, काम रोग का शमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।4।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

तन का पोषक क्षुधा रोग है, उसका अब अपहरण करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।5।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

विशद ज्ञान का दीप जलाकर, जीवन अपना चमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।6।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

भ्रमण कराया है कर्मों ने, उनका अब हम हनन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।7।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

महा मोक्ष फल पाकर के हम, शिव नगरी को गमन करें।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।8।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

पद अनर्घ पाकर के हम भी, निज चेतन को चमन करें।।
मल्लिनाथ की पूजा करके, मोक्ष मार्ग पर गमन करें।।9।।

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(मानव छन्द)

चैत सुदि एकम को जिनराज, गर्भ में आए जग के ईश।
धरा पर छाया मंगल कार, देव नर चरण झुकाए शीश।।1।।

ॐ ह्रीं चैत्रशुक्ला प्रतिपदायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सुदि एकादशि शुभकार, जन्म ले आये मल्लि कुमार।
प्राप्त कीन्हे अतिशय दश आप, हुआ धरती पर हर्ष अपार।।2।।

ॐ ह्रीं अगहनशुक्ला एकादश्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदी एकादशि मगसिर माह, जगा प्रभु के मन में वैराग्य।
महाव्रत लिए आपने धार, बुझाए प्रभू राग की आग।।3।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष वदि द्वितिया को भगवान, जगाए अनुपम केवल ज्ञान।
ध्यानकर घाती कर्म विनाश, देशना दे कीन्हे कल्याण।।4।।

ॐ ह्रीं पौषकृष्णा द्वितीयायां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पञ्चमी फाल्गुन सुदी महान, किए प्रभु आठों कर्म विनाश।
चले अष्टम भू पे जिनराज, किए प्रभु सिद्ध शिला पे वास।।5।।

ॐ ह्रीं फाल्गुनशुक्ला पंचम्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– तीन लोक के नाथ जिन, जगती पति जगदीश।
गुणगावें सब भाव से, सुर नर पशु के ईश॥

(अवतार छन्द)

श्री मल्लिनाथ जिनराज, शिव पदवी पाए।
अपराजित से जिनराज, चयकर के आए॥1॥
मिथला नगरी के भूप, कुम्भ कहलाए हैं।
माँ प्रजावती के गर्भ, में प्रभु आए है॥2॥
इक्ष्वाकू नन्दन आप, चिन्ह कलश धारी।
है स्वर्ण समान सुदेह,जिनकी मनहारी॥3॥
है पच्चिस धनुष महान, तन की ऊँचाई।
आयू पचपन हज्जार, वर्ष की शुभगाई॥4॥
प्रभु तडित चमकता देख, दीक्षा को धारे।
फिर किए आत्म का ध्यान, किए सुर जयकारे॥5॥
प्रभु पाए केवल ज्ञान, आतम ध्यान किए।
भवि जीवों के हित हेत, देशना आप दिए॥6॥

दोहा– कर्म नशाए आपने, भव से पाया पार।
भव्य जीव चरणों 'विशद', नमन करें शतवार॥

ॐ ह्रीं श्री मल्लिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भाते हैं हम भावना, पद में बारम्बार।
भक्त बने हम आपके, पाने भव से पार॥

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री मुनिसुव्रतनाथ पूजन-20

स्थापना (सखी छन्द)

हैं मुनीव्रतों के धारी, श्री मुनिसुव्रत अविकारी।
हम निज उर में तिष्ठाते, पद सादर शीश झुकाते॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सग्विणी छन्द)

शुद्ध यमुना के जल से ये झारी भरें,
नाथ के पाद में तीन धारा करें।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥1॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ चन्दन घिसाके कटोरी भरें,
नाथ पदाब्ज में चर्च के दुख हरें।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥2॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

श्वेत तन्दुल शशी रश्मि सम लाए हैं,
नाथ चरणों चढ़ा हम सुख पाए हैं।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥3॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सुरभित सुगन्धित कुसुम ले लिए,
जिन प्रभू के चरण आज अर्पण किए।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥4॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस ताजे चरू यह बना लाए हैं,
क्षुधा व्याधी नशाने को हम आाए है।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥5॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीप ज्योती जलाई ये हमने अहा,
मोह हरना मेरा लक्ष्य अन्तिम रहा।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥6॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप घट में सुरभि धूप की यह जले,
कर्म निर्मूल हों देह कांति मिले।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥7॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल ये ताजे चढ़ाते सरस फल भले,
मोक्ष की आश मेरी प्रभु अब फले
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥8॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

आठ द्रव्यों का यह अर्घ्य लाए सही,
प्राप्त हो नाथ हमको अब अष्टम मही।
मुनिसुव्रत के चरण पूजते भाव से,
स्वात्म पीयूष पाएँ बड़े चाव से॥9॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चौपाई)

सावन वदि द्वितीया शुभकारी, मुनिसुव्रत जिन मंगलकारी।
माँ के गर्भ में चयकर आए, रत्नवृष्टि कर सुर हर्षाए॥1॥

ॐ ह्रीं श्रावण कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशें कृष्ण वैशाख बखानी, जन्म लिए मुनिसुव्रत स्वामी।
इन्द्र देव सेना ले आए, जन्मोत्सव पर हर्ष मनाए॥2॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अस्थिर भोग जगत के गाए, जान प्रभु जी दीक्षा पाए।
घोर सुतप कर कर्म नशाए, दशें कृष्ण वैशाख सुहाए॥3॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा दशम्यां तपकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नमी कृष्ण वैशाख सुहानी, हुए प्रभू जी केवल ज्ञानी।
जगमग-जगमग दीप जलाए, सुरनर दीपावली मनाए॥4॥

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा नवम्यां ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फागुन वदि दशमी शुभकारी, मुक्ती पाए जिन त्रिपुरारी।
कूट निर्जरा से शिव पद पाए, शिवपुर अपना धाम बनाए॥5॥

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्ण द्वादश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– मुनिसुव्रत भगवान की, रही निराली चाल।
भव सुख पाते जीव जो, गाते हैं जयमाल॥

(नरेन्द्र छन्द)

प्राणत स्वर्ग से मुनिसुव्रत जिन, चयकर के जब आये।
राजगृही में खुशियाँ छाईं, जग जन सब हर्षाए॥1॥
नृप सुमित्र के राज दुलारे, जय श्यामा माँ गाई॥
गर्भ समय पर रत्न इन्द्र कई, वर्षाये थे भाई॥2॥
तीन लोक में खुशियाँ छाईं, घड़ी जन्म की आई।
सहस्त्राष्ट लक्षण के धारी, बीस धनुष ऊँचाई॥3॥
न्हवन कराया देवेन्द्रों ने, कछुआ चिन्ह बताया।
बीस हजार वर्ष की आयू, श्याम रंग शुभ गाया॥4॥
उल्का पात देखकर स्वामी, शुभ वैराग्य जगाए।
पञ्च मुष्ठि से केश लुंचकर, मुनिवर दीक्षा पाए॥5॥
आत्म ध्यान कर कर्म घातिया, नाश किए जिन स्वामी।
केवल ज्ञान जगाया प्रभु ने, हुए मोक्ष पथगामी॥6॥

दोहा– अष्टादश गणधर रहे, सुप्रभ प्रथम गणेश।
कूट निर्जरा से प्रभू, नाशे कर्म अशेष॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– मुनिसुव्रत भगवान का, जपे निरन्तर नाम।
इस भव के सुख प्राप्त कर, पावे वह शिव धाम॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री नमिनाथ जिन पूजन-21

स्थापना (सखी छन्द)

जो जिनवर नमि को ध्याते, अपने उर में तिष्ठाते।
वे होते मुक्ती गामी, बनते हैं श्री के स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(नरेन्द्र छन्द)

साम्य सुधारस पाने जल यह, निर्मल चरण चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

भव संताप निवारण हेतू, चरणों गंध चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

पद अखण्ड पाने हे स्वामी, अक्षत धवल चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभि स्वात्म गुण को पाने हम, सुरभित सुमन-चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

उदराग्नी प्रशमन करने को, यह नैवेद्य चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

मोह नाश कर ज्ञान जगाने, जगमग दीप जलाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्म जाल हम पूर्ण जलाने, सुरभित धूप जलाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्ण अतिन्द्रिय सुख फल पाने, फल यह सरस चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पद अनर्घ्य शाश्वत पाने हम, अतिशय अर्घ्य चढ़ाते।
बनें आपके पथगामी हम, यही भावना भाते।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(सखी छन्द)

आश्विन वदि द्वितिया जानो, गर्भागम मंगल मानो।
सुर रत्न श्रेष्ठ वर्षाए, शुभ गर्भ कल्याण मनाए।।1।।

ॐ ह्रीं आश्विनकृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी अषाढ़ वदि गाई, जन्मे नमि मंगल दाई।
शत इन्द्र शरण में आए, जो जन्म कल्याण मनाए।।2।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां जन्मकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशमी आषाढ़ वदि स्वामी, दीक्षा धारे शिवगामी।
मन में वैराग्य जगाए, वन में जा ध्यान लगाए।।3।।

ॐ ह्रीं आषाढ़कृष्णा दशम्यां दीक्षाकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मगसिर सुदि ग्यारस पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, उपदेश जीव तब पाए।।4।।

ॐ ह्रीं मार्गशीर्षशुक्ला एकादश्यां केवलज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौदश वैशाख की गायी, मुक्ती पाए जिन भाई।
अपने सब कर्म नशाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं वैशाखकृष्णा चतुर्दश्यां मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– चेतन गुण में लीन नित, रहते नमि जिनराज।
जयमाला गाए चरण, मिलकर सकल समाज।।

(रोला छन्द)

अपराजित से नाथ, चयकर भूपर आये।
मिथला नगरी को आकर, के धन्य बनाए।।1।।
विजय राज पितु जान, इक्ष्वाकु वंश कहाए।
मात वप्रिला नाथ, चिन्ह कमल सित पाए।।2।।
आयू दश हज्जार वर्ष, की पाए स्वामी।
साठ हाथ का उच्च, तन पाए शिवगामी।।3।।
जातिस्मरण कर प्राप्त, प्रभु वैराग्य जगाए।
लक्षण सहसरु आठ, देह में प्रभु प्रगटाये।।4।।
सहस भूप जिनराज, के संग दीक्षा पाए।
घाती कर्म विनाश, केवल ज्ञान जगाए।।5।।
गणधर सत्रह श्रेष्ठ, सुप्रभ प्रथम कहाए।।
करके कर्म विनाश, नमि जिन मुक्ती पाए।।6।।

दोहा– तीर्थराज सम्मेदगिर, कूट मित्र धर जान।
जिन प्रभु भक्ती पाए हैं, रहे हृदय में ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री नमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– नमीनाथ भगवान के, गुण हैं उपमातीत।
भक्त मुक्ति पावे 'विशद', धारें गुण में प्रीत।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री नेमिनाथ पूजन-22

स्थापना (सखी छन्द)

जिनको जग भोगना भाए, वे मुक्ती पथ अपनाए।
हे नेमिनाथ जगनामी, आह्वानन् करते स्वामी।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(भुजंग प्रयात)

प्रभु के चरण तीन धारा कराएँ,
सभी पाप मल धोके पावन कहाएँ।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।1।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

कपूरादि चंदन महांगध लाए,
परम मोक्ष गामी की पूजा को आए।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।2।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

धुले शालि तन्दुल धरे पुञ्ज आगे,
निजानन्द पाएँ सभी शोक भागें
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।3।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुगंधित सुमन ले बनाई ये माला,
चढ़ाते चरण काम को मार डाला।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस मिष्ठ नैवेद्य ताजे बनाएँ,
प्रभू पूजते भूख व्याधी नशाएँ।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।5।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जले ज्योति कर्पूर की ध्वांत नाशें,
करें आरती ज्ञान ज्योती प्रकाशें।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।6।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

सुगन्धित सुरभि धूप खेते अगनि में,
सभी कर्म की भस्म हो एक क्षण में।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।7।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री फलादि ताजे ये चरणों चढ़ाएँ,
मिले मोक्ष फल नाथ शिव सौख्य पाएँ
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।8।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक गंध आदिक मिला अर्घ्य लाए,
सुपद श्रेष्ठ शाश्वत प्रभू पाते आए।
श्री नेमि जिन की हम पूजा रचाएँ,
लगे कर्म अपने सभी हम नशाएँ।।9।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

भूलोक पूर्ण हर्षाया, गर्भागम प्रभु ने पाया।
कार्तिक सुदि षष्ठी पाए, प्रभु स्वर्ग से चयकर आए।।1।।

ॐ ह्रीं कार्तिक शुक्लाषष्ठम्यां गर्भ मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी स्वामी, जन्मे जिन अन्तर्यामी।
भू पे छाई उजियाली, पा दिव्य दिवाकर लाली।।2।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां जन्म मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण सुदि षष्ठी गाई, नेमी जिन दीक्षा पाई।
पशुओं का बन्धन तोड़ा, इस जग से मुख को मोड़ा।।3।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्लाषष्ठम्यां तप मंगलमण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अश्विन सुदि एकम जानो, प्रभु ज्ञान जगाए मानो।
शिव पथ की राह दिखाए, जीवों को अभय दिलाए।।4।।

ॐ ह्रीं आश्विन शुक्ला प्रतिपदायां केवलज्ञान मण्डिताय श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आठें आषाढ़ सुदि गाई, भव से प्रभु मुक्ती पाई।
नश्वर शरीर यह छोड़े, कर्मों के बन्धन तोड़े।।5।।

ॐ ह्रीं श्रावण शुक्ला अष्टम्यां मोक्षमंगल प्राप्त श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– जिन अर्चा जो भी करें, वे हों मालामाल।
नेमिनाथ भगवान की, गाएँ नित गुणमाल।।

(तोटक छन्द)

जय नेमिनाथ चिद्रूपराज, जय जय जिनवर तारण जहाज।
जय समुद्र विजय जग में महान, प्रभु शिवादेवि के गर्भ आन।।1।।
अनहद बाजों की बजी तान, सुर पुष्प वृष्टि कीन्हे महान।
सुर जन्म कल्याणक किए आन, है शंख चिन्ह जिनका प्रधान।।2।।
ऊँचाई चालिस रही हाथ, इक सहस आठ लक्षण सनाथ।
है श्याम रंग तन का महान, इस जग में जिनकी अलग शान।।3।।
जीवों पर करुणा आप धार, मन में जागा वैराग्य सार।
झंझट संसारी आप छोड़, गिरनार गये रथ आप मोड़।।4।।
कर केश लुंच व्रत लिए धार, संयम धारे हो निर्विकार।।
फिर किए आत्म का प्रभू ध्यान, तब जगा आपको विशद ज्ञान।।5।।
तब दिव्य देशना दिए नाथ, सुर नर पशु सुनते एक साथ।
फिर करके सारे कर्म नाश, गिरनार से पाए मोक्ष वास।।6।।

दोहा– भोगों को तज योग धर, दिए 'विशद' सन्देश।
वरने शिव रानी चले, धार दिगम्बर भेष।।

ॐ ह्रीं श्री नेमिनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– गुणाधार योगी बने, अपनाया शिव पंथ।
मोक्ष महल में जा बसे, किया कर्म का अंत।।

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री पार्श्वनाथ जिन पूजन-23

स्थापना (सखी छन्द)

उपसर्गों पर जय पाए, वह पार्श्वनाथ कहलाए।
जिनकी महिमा जग गाए, हम आह्वान को आए।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

क्षीरोदधि का पय सम जल प्रभु, धारा देने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।1।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

मलयागिर चन्दन केसर घिस, चरण चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।2।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षय सुख पाने को अक्षत, पुञ्ज चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।3।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरतरु के यह सुमन मनोहर, नाथ चढ़ाने लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।4।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

घृत के यह नैवेद्य सरस शुभ, ताजे नाथ बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

गौघृत भर कंचन दीपक में, दीपक ज्योति जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कृष्णागरू की धूप बनाकर, अग्नी बीच जलाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।7।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अरु बादाम सुपारी, थाल में श्रीफल लाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।8।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत आदिक से, हम यह अर्घ्य बनाए हैं।
पार्श्व प्रभू के श्री चरणों में, पूजा करने आये हैं।।9।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(दोहा)

वैशाख कृष्ण द्वितिया प्रभू, पाए गर्भ कल्याण।
चय हो अच्युत स्वर्ग से, भूपर किए प्रयाण।।1।।

ॐ ह्रीं वैशाख कृष्णा द्वितीयायां गर्भकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, जन्मे पारस नाथ।
सुर नरेन्द्र देवेन्द्र सब, चरण झुकाए माथ।।2।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पौष कृष्ण एकादशी, छोड़ दिया परिवार।
संयम धारण कर बने, पार्श्व प्रभू अनगार।।3।।

ॐ ह्रीं पौषबदी ग्यारस तपकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चैत कृष्ण वदि चौथ को, पाए केवल ज्ञान।
समवशरण रचना किए, आके देव प्रधान।।4।।

ॐ ह्रीं चैत्रवदी चतुर्थी कैवल्य ज्ञानकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रावण शुक्ला सप्तमी, करके आतम ध्यान।
कर्म नाश करके प्रभू, पाए पद निर्वाण।।5।।

ॐ ह्रीं सावनसुदी सप्तमी मोक्षकल्याणक प्राप्त श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– ध्यान लगाया आपने, जीते सब उपसर्ग।
गुण माला गाते विशद, पाने हम अपवर्ग॥

(राधेश्याम छन्द)

इन्द्र नरेन्द्र महेन्द्र सुरेन्द्र, गणेन्द्र सुमहिमा गाते हैं।
जिनवर के पञ्च कल्याणक में, खुश हो जयकार लगाते हैं॥1॥
जब गर्भागम में प्रभु आते, तब रत्न वृष्टि करते भारी।
यह तीर्थंकर प्रकृति का फल, इस जग में गाया शुभकारी॥2॥
जब जन्म कल्याणक होता है, तब यशोगान सुर करते हैं।
तीनों लोकों के जीव सभी, उस समय भाव शुभ करते हैं॥3॥
इस जग में रहकर के स्वामी, इस जग में न्यारे रहते हैं।
सबसे रहते हैं वह विरक्त, सब उनको अपना कहते है॥4॥
गुणगान करें सब जीव सदा, यह पुण्य की ही बलिहारी है।
जो उभय लोक में जीवों को, होता शुभ मंगलकारी है॥5॥
सब कर्म नाश करके स्वामी, मुक्ती पथ पर बढ़ जाते हैं।
है शिवनगरी में सिद्धशिला, जिस पर निज धाम बनाते हैं॥6॥

दोहा– यह संसार असार है, जान सके ना नाथ।
आज ज्ञान हमको हुआ, अतः झुकाते माथ॥

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– भक्त कई तारे प्रभू, आई हमारी बार।
पास बुलालो शीघ्र ही, अब ना करो अवार॥

॥इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्॥

श्री महावीर पूजन-24

हैं वीतराग धारी, श्री महावीर अनगारी।
निज उर में हम तिष्ठाते, जिन पद में शीश झुकाते।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट आह्वाननं। ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(लक्ष्मीधरा-छन्द)

तीर्थवारी से यह स्वच्छ झारी भरें,
तीर्थ कर्तार के पाद धारा करें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥1॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

स्वर्ण के सदृश यह गंध हम लाए हैं,
राग की दाह को मैटने आए हैं।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥2॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

सूर्य रश्मी सदृश श्वेत अक्षत किए,
आत्म निधि प्राप्त हो पुञ्ज आए लिए
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥3॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

श्रेष्ठ सुरभित कुसुम थाल में भर लिए,
काम व्याधी हमारी प्रभू नाशिए।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥4॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सरस चरु यह बना लाए हैं थाल में,
क्षुधा व्याधी हरो नाथ पूजें तुम्हें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥5॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

कर रहे नाथ चरणों में हम आरती,
चित्त में अब जगे ज्ञान की भारती।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले॥6॥

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

धूप सुरभित प्रभू अग्नि में खेवते,
कर्म शत्रू जलें आप पद सेवते।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।7।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल से पूजा रचाते हृदय मम खिले,
नाथ पद पूजते सर्व सिद्धी मिले।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।8।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

नीर गंधादि से स्वर्ण थाली भरें,
शीघ्र शिवसुन्दरी नाथ हम भी वरें।
वीर के पाद पूजा किए मन खिले,
अब हमें शीघ्र ही मोक्ष पदवी मिले।।9।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पञ्चकल्याणक के अर्घ्य

(चाल छन्द)

षष्ठी आषाढ़ सुदि पाए, सुर रत्न की झड़ी लगाए।
चहुँ दिश में छाई लाली, मानो आ गई दिवाली।।1।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ शुक्ल षष्ठी गर्भकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तेरस सुदि चैत की आई, जन्मोत्सव की घड़ी आई।
प्राणी जग के हर्षाए, खुश हो जयकार लगाए।।2।।

ॐ ह्रीं चैत्रसुदी तेरस जन्मकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अगहन सित दशमी गाई, प्रभु ने जिन दीक्षा पाई।
मन में वैराग्य जगाया, अन्तर का राग हटाया।।3।।

ॐ ह्रीं मगसिर सुदी दशमी तपकल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वैशाख सु दशमी पाए, प्रभु केवल ज्ञान जगाए।
सुर समवशरण बनवाए, जिन दिव्य ध्वनि सुनाएँ।।4।।

ॐ ह्रीं वैशाखशुक्ला दशमी केवलज्ञान प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों की सांकल तोड़े, मुक्ती से नाता जोड़े।
कार्तिक की अमावस पाए, शिवपुर में धाम बनाए।।5।।

ॐ ह्रीं कार्तिक अमावस्यायां मोक्ष कल्याणक प्राप्त श्री महावीर जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा– हुआ नहीं होगा नहीं, महावीर सा वीर।
जयमाला गाते यहाँ, पाने भव का तीर।।

(गीता छन्द)

सिद्धार्थ नृप के पुत्र हैं, महावीर जिन कहलाए हैं।
चयकर प्रभू जी स्वर्ग से, कुण्डलपुरी में आए हैं।।1।।
पाए प्रभू जी गर्भ अन्तिम, मात त्रिशला जानिए।
जिन मात देखे स्वप्न सोलह, नाथ वंशी मानिए।।2।।
शुभ जन्म कल्याणक समय पर, न्हवन मेरू पर किए।
शत् इन्द्र चरणों भक्ति से, नत ढोक चरणों में दिए।।3।।
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर जिन कहलाए हैं।
केहरि सुलक्षण दाएँ पग में, महावीर जिनवर पाएँ हैं।।4।।
शुभ जाति स्मृति से प्रभू, वैराग्य मन प्रगटाए हैं।
जग भोग ना भाए जिन्हें, संयम 'विशद' अपनाए हैं।।5।।
प्रभु ध्यान कर निज आत्म का, केवल्य ज्ञान जगाए हैं।
कर कर्म घाती नाश जिन, अनन्त चतुष्टय पाए हैं।।6।।

दोहा– ज्ञान ध्यान तप कर प्रभू, कीन्हे कर्म विनाश।
मुक्त हुए संसार से, पाए शिवपुर वास।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– पूजा करने के लिए, द्रव्य लाए यह शुद्ध।
सम्यकदर्शन ज्ञान हम, पाएँ चरण विशुद्ध॥

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

समुच्चय जयमाला

दोहा– तीर्थंकर भगवान की, गूँजे जयजयकार।
जयमाला गाएँ यहाँ, सुर नर भक्ती धार॥

(विधाता छन्द)

अनादी काल से हमको, कर्म ने जग भ्रमाया है।
उदय मिथ्यात्व का पाया, ना चेतन चेत पाया है॥
शुभाशुभ कर्म के फल ने, हमें क्या दिन दिखाए हैं।
कभी हँसकर के दिन बीते, कभी रोकर बिताए हैं॥1॥
विभावी भाव करके हम, कर्म का बन्ध करते हैं।
उदय से कर्म के खोटे, कार्य से हम ना डरते हैं॥
कर्म आयू उदय आते, नरक पशु गति में जाते हैं।
वहाँ वध बंध छेदन के, असहनीय दुःख पाते हैं॥2॥
भाग्य से फिर मनुज भव पा, नहीं श्रद्धा जगाते हैं।
अतः स्वर्गादि में जाकर, भोग में मन लगाते हैं॥
परावर्तन पञ्च करके, ना भव से पार पाये हैं।
नहीं घबराए हैं इसने, पुनर्पुन जग भ्रमाए हैं॥3॥
जो शिवपथ के बनें राही, प्रथम श्रद्धा जगाते हैं।
बनें वह भेद ज्ञानी फिर, विशद चारित्र पाते हैं॥
मुनि निर्ग्रन्थ होकर के, स्वयं आतम को ध्याते हैं।
करें संवर सहित तप जो, कर्म अपने नशाते हैं॥4॥
बनें शुद्धोपयोगी मुनि, निजानुभूति पाते हैं।
कर्मघाती नशाकर के, ज्ञान केवल जगाते हैं॥
जो त्रिभुवन के तिलक बनकर, मोक्ष सुख को ग्रहण करते।
परम निर्वाण पाते हैं, मुक्ति वधु का वरण करते॥5॥

दोहा– रहे स्वयंभू जिन प्रभू, पाते शिव सोपान।
कर्म नाश करके स्वयं, पाते पद निर्वाण॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– 'विशद' ज्ञान धारी प्रभो!, जगती पति जगदीश।
चरण कमल में आपके, झुका रहे हम शीश॥

।।इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

आरती

(तर्ज-मांई रि मांई...)

चौबीस जिन की आरती करने, दीप जलाकर लाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए॥
जिनवर के चरणों में नमन्, प्रभुवर के चरणों में नमन्।
ऋषभ नाथ जी धर्म प्रवर्तक, अजित कर्म के जेता।
सम्भव जिन अभिनन्दन स्वामी, अतिशय कर्म विजेता॥
सुमति नाथ जिनवर के चरणों, मति सुमति हो जाए॥
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए॥
पद्म प्रभु जी पद्म हरे हैं, जिन सुपार्श्व जी भाई।
चन्द्र प्रभु अरू पुष्पदन्त की, धवल कांति सुखदाई॥
शीतल जिन के चरण शरण में, शीतलता मिल जाए।
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए॥
श्रेयांसनाथ जिन श्रेय प्रदायक, वासुपूज्य जिन स्वामी।
विमलानन्त प्रभु अविकारी, जग में अन्तर्यामी॥
धर्मनाथ जी धर्म प्रदाता, इस जग में कहलाए॥
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए॥
शांति कुन्थु अरू अरह नाथ जी, तीन-तीन पद पाए।
चक्री काम कुमार तीर्थंकर, बनकर मोक्ष सिधाए॥
मल्लिनाथ जी मोह मल्ल को, क्षण में मार भगाए॥
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए॥
मुनिसुव्रत जी व्रत को धारे, नमि धर्म के धारी।
नेमिनाथ जी करूणा धारे, पार्श्वनाथ अविकारी॥
वर्धमान सन्मति वीर अति, महावीर कहलाए॥
विशद आरती करने के शुभ, हमने भाग्य जगाए॥

श्री चौबीसी तीर्थंकर चालीसा

दोहा– परमेष्ठी के पद युगल, वन्दन बारम्बार।
चालीसा पढ़ते यहाँ, पाने मुक्ती द्वार॥
तीर्थंकर पद पाए हैं, चौबीसों जिनराज।
'विशद' भाव से हम यहाँ, गुण गाते हैं आज॥

(चौपाई)

जम्बूद्वीप रहा मनहारी, जिसमें भरत क्षेत्र शुभकारी।
चौबिस तीर्थंकर शिव पाए, वर्तमान चौबीसी गाए॥
आदिनाथ तीर्थंकर स्वामी, प्रथम हुए मुक्तीपथ गामी।
अजितनाथ के हम गुण गाते, मुक्ती की जो राह दिखाते॥
सम्भव कार्य असम्भव करते, कष्ट सभी जीवों के हरते।
अभिनंदन की महिमा न्यारी, गाती है जगती यह सारी॥
सुमतिनाथ सुमति के दाता, जग जीवों के भाग्य विधाता।
पद्म प्रभु पद्मेश कहलाए, पद्म के ऊपर आसन पाए॥
जिन सुपार्श्व की है बलिहारी, मुक्ती पाए हो अविकारी।
चन्द्र प्रभु चन्दा सम सोहें, भवि जीवों के मन को मोहें॥
शीतलनाथ सुशीतल गाए, शीतलता जग में प्रगटाए।
श्रेयनाथ हैं श्रेय प्रदाता, जग में मुक्ती पद के दाता॥
वासुपूज्य गुण विमल प्रकाशी, बने आप शिवपुर के वासी॥
जिन अनन्त गुण पाए अनन्ता, ज्ञान अनन्त पाए भगवन्ता।
धर्मनाथ जिन धर्म के धारी, तज के राग हुए अनगारी॥
शांतिनाथ जिन हुए निराले, जग को शांती देने वाले।
कुन्थुनाथ त्रय पद के धारी, तीन लोक में करूणाकारी॥
अरहनाथ कर्मारि हन्ता, प्रभु गुण तुमरे रहे अनन्ता।
मोह मल्ल के नाशन हारे, मल्लिनाथ जिनराज हमारे॥
मुनिसुव्रत से व्रत कई पाए, क्षीण मोह प्रभु आप कहाए।
नमीनाथ पद नमन हमारा, हमको भी दो नाथ सहारा॥
नेमिनाथ जगनाथ कहाये, ऊर्जयन्त से मुक्ती पाए।
पार्श्वनाथ महिमा दिखलाए, जो उपसर्ग जयी कहलाए॥
महावीर सा वीर न गाया, सारे जग में कोई पाया।

चौबिस यह तीर्थंकर जानो, मोक्ष मार्ग के नेता मानो॥
जो भी तीर्थंकर को ध्याये, भाव सहित शुभ महिमा गाए।
वह भी तीर्थंकर को ध्याये, सारे जग का वैभव पाए॥
तीर्थंकर की महिमा न्यारी, सारे जग में अतिशयकारी।
प्रभु जब केवलज्ञान जगाते, समवशरण आ देव रचाते॥
गणधर कोई बनकर आते, वह भी मुक्ति पथ दर्शाते।
दिव्य देशना प्रभु सुनाते, प्राणी दर्शन ज्ञान जगाते॥
समवशरण में केवलज्ञानी, आते है शिवपद के दानी।
पूरब धारी मुनिवर आते, शिक्षक भी स्थान बनाते॥
विपुलमति मन:पर्ययज्ञानी, साथ में आते अवधिज्ञानी।
संत विक्रिया ऋद्धीधारी, वादी भी आते अनगारी॥
यक्ष यक्षिणी भी शुभ आते, श्रावक दिव्य देशना पाते।
'विशद' भावना हम यह भाते, पद में सादर शीश झुकाते॥
तीर्थंकर पदवी को पाएँ, शिवपुर अपना धाम बनाएँ।
हम भी शिवपथ के अनुगामी, बन जाएँ हे अन्तर्यामी॥
दोहा–चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
चौबीसों जिनराज के, चरण झुकाए माथ॥
सुख-शांति सौभाग्य श्री, पाए अपरम्पार।
अल्प समय में वह 'विशद', पाए भव से पार॥

जाप : ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर जिनेन्द्राय नम:।

प्रशस्ति

ॐ नम: सिद्धेभ्य: श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदि सागराचार्य जातास्तत् शिष्य: श्री महावीर कीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्या: श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्य श्री भरत सागराचार्य श्री विराग सागराचार्या जातास्तत् शिष्य आचार्य विशदसागराचार्य जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्य-खण्डे भारतदेशे दिल्ली प्रान्ते अशोक विहार फेस-1 नगरे श्री महावीर जिनालय मध्ये पौष मासे शुक्लपक्षे पञ्चमी रविवासरे अद्य वीर निर्वाण सम्वत् 2540 वि.सं. 2070 श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान रचना समाप्ति इति शुभं भूयात्।

प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य श्री 108 विशदसागर जी महाराज द्वारा रचित पूजन महामंडल विधान साहित्य सूची

1. श्री आदिनाथ महामण्डल विधान
2. श्री अजितनाथ महामण्डल विधान
3. श्री संभवनाथ महामण्डल विधान
4. श्री अभिनन्दननाथ महामण्डल विधान
5. श्री सुमतिनाथ महामण्डल विधान
6. श्री पद्मप्रभ महामण्डल विधान
7. श्री सुपार्श्वनाथ महामण्डल विधान
8. श्री चन्द्रप्रभू महामण्डल विधान
9. श्री पुष्पदंत महामण्डल विधान
10. श्री शीतलनाथ महामण्डल विधान
11. श्री श्रेयांसनाथ महामण्डल विधान
12. श्री वासुपूज्य महामण्डल विधान
13. श्री विमलनाथ महामण्डल विधान
14. श्री अनन्तनाथ महामण्डल विधान
15. श्री धर्मनाथ जी महामण्डल विधान
16. श्री शांतिनाथ महामण्डल विधान
17. श्री कुंथुनाथ महामण्डल विधान
18. श्री अरहनाथ महामण्डल विधान
19. श्री मल्लिनाथ महामण्डल विधान
20. श्री मुनिसुव्रतनाथ महामण्डल विधान
21. श्री नमिनाथ महामण्डल विधान
22. श्री नेमिनाथ महामण्डल विधान
23. श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान
24. श्री महावीर महामण्डल विधान
25. श्री पंचपरमेष्ठी विधान
26. श्री णमोकार मंत्र महामण्डल विधान
27. श्री सर्वसिद्धीप्रदायक श्री भक्तामर महामण्डल विधान
28. श्री सम्मेद शिखर विधान
29. श्री श्रुत स्कंध विधान
30. श्री यागमण्डल विधान
31. श्री जिनबिम्ब पंचकल्याणक विधान
32. श्री त्रिकालवर्ती तीर्थंकर विधान
33. श्री कल्याणकारी कल्याण मंदिर विधान
34. लघु समवशरण विधान
35. सर्वदोष प्रायश्चित विधान
36. लघु पंचमेरू विधान
37. लघु नंदीश्वर महामण्डल विधान
38. श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ विधान
39. श्री जिनगुण सम्पतिविधान
40. एकीभाव स्तोत्र विधान
41. श्री ऋषि मण्डल विधान
42. श्री विषापहार स्तोत्र महामण्डल विधान
43. श्री भक्तामर महामण्डल विधान
44. वास्तु महामण्डल विधान
45. लघु नवग्रह शांति महामण्डल विधान
46. सूर्य अरिष्टनिवारक श्री पद्मप्रभ विधान
47. श्री चौंसठ ऋद्धि महामण्डल विधान
48. श्री कर्मदहन महामण्डल विधान
49. श्री चौबीस तीर्थंकर महामण्डल विधान
50. श्री नवदेवता महामण्डल विधान
51. वृहद ऋषि महामण्डल विधान
52. श्री नवग्रह शांति महामण्डल विधान
53. कर्मजयी श्री पंच बालयति विधान
54. श्री तत्वार्थसूत्र महामण्डल विधान
55. श्री सहस्रनाम महामण्डल विधान
56. वृहद नंदीश्वर महामण्डल विधान
57. महामृत्युंजय महामण्डल विधान
59. श्री दशलक्षण धर्म विधान
60. श्री रत्नत्रय आराधना विधान
61. श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान
62. अभिनव वृहद कल्पतरू विधान
63. वृहद श्री समवशरण मण्डल विधान
64. श्री चारित्र लब्धि महामण्डल विधान
65. श्री अनन्तव्रत महामण्डल विधान
66. कालसर्पयोग निवारक मण्डल विधान
67. श्री आचार्य परमेष्ठी महामण्डल विधान
68. श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान
69. त्रिविधान संग्रह–1
70. त्रि विधान संग्रह
71. पंच विधान संग्रह
72. श्री इन्द्रध्वज महामण्डल विधान
73. लघु धर्म चक्र विधान
74. अर्हत महिमा विधान
75. सरस्वती विधान
76. विशद महाअर्चना विधान
77. विधान संग्रह (प्रथम)
78. विधान संग्रह (द्वितीय)
79. कल्याण मंदिर विधान (बड़ा गांव)
80. श्री अहिच्छत्र पार्श्वनाथ विधान
81. विदेह क्षेत्र महामण्डल विधान
82. अर्हत नाम विधान
83. सम्यक् अराधना विधान
84. श्री सिद्ध परमेष्ठी विधान
85. लघु नवदेवता विधान
86. लघु मृत्युँजय विधान
87. शान्ति प्रदायक शान्तिनाथ विधान
88. मृत्युञ्जय विधान
89. लघु जम्बू द्वीप विधान
90. चारित्र शुद्धिव्रत विधान
91. क्षायिक नवलब्धि विधान
92. लघु स्वयंभू स्तोत्र विधान
93. श्री गोम्मटेश बाहुबली विधान
94. वृहद निर्वाण क्षेत्र विधान
95. एक सौ सत्तर तीर्थंकर विधान
96. तीन लोक विधान
97. कल्पद्रुम विधान
98. श्री चौबीसी निर्वाण क्षेत्र विधान
99. श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर विधान
100. श्री सहस्त्रनाम विधान (लघु)
101. श्री त्रैलोक्य मण्डल विधान (लघु)
102. श्री तत्वार्थ सूत्र विधान (लघु)
103. पुण्यास्त्रव विधान
104. सप्तऋषि विधान
105. तेरहद्वीप विधान
106. श्री शान्ति,कुन्थु, अरहनाथ मण्डल विधान
107. श्रावकव्रत दोष प्रायश्चित विधान
108. तीर्थंकर पंचकल्याणक तीर्थ विधान
109. सम्यक् दर्शन विधान
110. श्रुतज्ञान व्रत विधान
111. ज्ञान पच्चीसी व्रत विधान
112. विशद पञ्चागम संग्रह
113. जिन गुरु भक्ती संग्रह
114. धर्म की दस लहरें
115. स्तुति स्तोत्र संग्रह
116. विराग वंदन
117. बिन खिले मुरझा गए
118. जिंदगी क्या है
119. धर्म प्रवाह
120. भक्ती के फूल
121. विशद श्रमण चर्या
122. रत्नकरण्ड श्रावकाचार चौपाई
123. इष्टोपदेश चौपाई
124. द्रव्य संग्रह चौपाई
125. लघु द्रव्य संग्रह चौपाई
126. समाधितन्त्र चौपाई
127. शुभषितरत्नावली
128. संस्कार विज्ञान
129. बाल विज्ञान भाग–3
130. नैतिक शिक्षा भाग–1, 2, 3
131. विशद स्तोत्र संग्रह
132. भगवती आराधना
133. चिंतवन सरोवर भाग–1
134. चिंतवन सरोवर भाग–2
135. जीवन की मन:स्थितियाँ
136. आराध्य अर्चना
137. आराधना के सुमन
138. मूक उपदेश भाग–1
139. मूक उपदेश भाग–2
140. विशद प्रवचन पर्व
141. विशद ज्ञान ज्योति
142. जरा सोचो तो
143. विशद भक्ती पीयूष
144. विजोलिया तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह
145. विराटनगर तीर्थपूजन आरती चालीसा संग्रह

Ñfr % fo'knpkSchlhfo/kku

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR; jRukdj] {kekewfrZ vkpk;Z Jh 108 fo'knlkxj th egkjkt

laLdj.k % izFke&2014* izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kkylkxj th egkjkt

lgk;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkse lkxj th egkjkt

laiknu % cz-T;ksfr nhnh ¼9829076085½ cz- vkLFkk nhnh] cz- liuk nhnh

la;kstu % cz- lksuw nhnh] cz- fdj.k nhnh] cz- vkjrh nhnh] cz- mek nhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIr LFky % 1- tSu ljkso lfefr] fueZy dqekj xksèkk] 2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV euhgkjksa dk jkLrk] t;iqj Qksu %0141&2319907 ¼?kj½ eks- %9414812008

2- Jh jkts'k dqekj tSu BsdsnkJ ,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- %9414016566

3- fo'kn lkfgR; dsUnz Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh fu;j ykyckÙkh pkSd] xka/khuxj] fnYyh eks- 09818115971] 09136248971

eqY; % 40@& #- ek=k

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री नेमचन्द जैन	स्वर्गीय श्रीमती देवी जैन पुत्र वीरेन्द्र कुमार परिवार
ई–130–एस, दूसरी मंजिल, अशोक विहार फेस–1, दिल्ली	आई–56, अशोक विहार फेस–1, दिल्ली.
मो.: 9811114631	मो.: 9811051859

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com

Ñfr % **fo'kn pkSchlh fo/kku**

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR;jRukdj] {kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'kn lkxj th egkjkt

laLdj.k % izFke&2014 * izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kky lkxj th egkjkt

lgk;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkse lkxj th egkjkt

laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ cz- vkLFkk nhnh] cz- liuk nhnh

la;kstu % cz- lksuw nhnh] cz- fdj.k nhnh] cz- vkjrh nhnh] cz- mek nhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIr LFky % 1- tSu ljksoj lfefr] fueZydqekj xksèkk]
2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu%0141&2319907 ¼?kj½ eks- % 9414812008

2- Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- % 9414016566

3- fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j yky cÙkh pkSd] xka/kh uxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971

ewY; % 40@& #- ek=k

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री विनोद कुमार जैन
एच–44, अशोक विहार फेस–1, दिल्ली
मो.: 9212404809

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com

Ñfr % **fo'kn pkSchlh fo/kku**

Ñfrdkj % i-iw- lkfgR;jRukdj] {kekewfrZ
vkpk;Z Jh 108 fo'kn lkxj th egkjkt

laLdj.k % izFke&2014 * izfr;k¡ %1000

ladyu % eqfu Jh 108 fo'kky lkxj th egkjkt

lgk;ksxh % {kqYyd Jh 105 folkse lkxj th egkjkt

laiknu % cz- T;ksfr nhnh ¼9829076085½ cz- vkLFkk nhnh] cz- liuk nhnh

la;kstu % cz- lksuw nhnh] cz- fdj.k nhnh] cz- vkjrh nhnh] cz- mek nhnh

lEidZ lw=k % 9829127533] 9953877155

izkfIr LFky % 1- tSu ljksoj lfefr] fueZydqekj xksèkk]
2142] fueZy fudqat] jsfM;ks ekdsZV
efugkjksa dk jkLrk] t;iqj
Qksu%0141&2319907 ¼?kj½ eks- % 9414812008

2- Jh jkts'k dqekj tSu Bsdsnkj
,&107] cqèk fogkj] vyoj] eks- % 9414016566

3- fo'kn lkfgR; dsUnz
Jh fnxEcj tSu eafnj dqvk¡ okyk tSuiqjh
jsokM+h ¼gfj;k.kk½] 9812502062] 09416888879

4- fo'kn lkfgR; dsUnz] gjh'k tSu
t; vfjgUr VªsMlZ] 6561 usg: xyh
fu;j yky cÙkh pkSd] xka/kh uxj] fnYyh
eks- 09818115971] 09136248971

ewY; % 40@& #- ek=k

-: अर्थ सौजन्य :-

श्री ईश्वरचन्द जैन
सी–166, अशोक विहार फेस–1, दिल्ली. मो.: 9868104364

मुद्रक : पारस प्रकाशन, शाहदरा, दिल्ली. फोन नं. : 09811374961, 09818394651
E-mail : pkjainparas@gmail.com, parasparkashan@yahoo.com